सितम्बर 2016

# दादावाणी

कीमत ₹ 10

मैं था तो काम हुआ।

मेरी वजह से काम हुआ।

मुझ से काम हुआ।

मेरे बगैर काम नहीं हो सकता।

मैंने कितना बढ़िया काम किया!

मैं अच्छा काम करता हूँ।

कर्तापन की छाया में पनपता मीठा रस

## गर्वरस

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 11 अंक : 11
अखंड क्रमांक : 131
**सितम्बर 2016**

**संपर्क सूत्र :**
**त्रिमंदिर,** सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
**फोन:** (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
**www.dadabhagwan.org**
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

**Printed & Published by**
**Dimple Mehta on behalf of**
**Mahavideh Foundation**
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Owned by**
**Mahavideh Foundation**
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Printed at**
**Amba Offset**
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Published at**
**Mahavideh Foundation**
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
**Total 32 pages including cover**

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**
**१५ साल**
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
**वार्षिक**
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## कर्तापन की छाया में पनपता मीठा रस, 'गर्वरस'

### संपादकीय

अध्यात्म मार्ग की तरफ मुड़े जीव अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए जब मोक्षमार्ग की संकरी पगडंडी से गुज़रते हैं, तब कितनी ही बार चढ़ते हैं और कितनी ही बार गिरते हैं। तो इस मार्ग में खुद का संपूर्ण जीवन न्योछावर कर देने के बाद भी वांछित परिणाम प्राप्त करने में क्या बाधक है? मोक्षमार्ग के बाधक कारणों में से एक कारण है 'गर्वरस'। गर्व अर्थात् 'जहाँ स्वयं नहीं करता है', वहाँ ऐसा मानना कि 'मैं कर रहा हूँ'। उस समय अंदर जो रस उत्पन्न होता है, वह रस है गर्वरस।

पूरी दुनिया का सब से मीठा रस, जिसकी मिठास की तुलना और किसी से हो ही नहीं सकती। कौन सा रस है यह? दादाश्री कहते हैं, यह मीठा रस है, 'गर्वरस'। बाकी सभी मिठासें गर्वरस के सामने फीकी लगती हैं। कोई अगर सिर्फ इतना ही कहे कि 'आप बहुत अच्छा समझाते हो, आप बहुत जानते हो' तो बस काफी हो गया। अंदर गुद्‌गुदी हो ही जाती है, अंदर अच्छा लगता है और फिर अंदर रस टपकता है। उसे अंदर अच्छा लगे तो समझो हो गया खत्म। अंदर चख ही लिया। वह अंदर घर कर जाएगा। शुरुआत यहाँ से होती है और फिर वह अंधेरे में रहने से बढ़ती जाती है और फिर पटखनी खाता है।

परम पूज्य दादाश्री ने अहंकार के उद्‌भव स्थान से लेकर उसके विस्तार की समग्र डालियाँ व पत्तों तक के बारे में बताया है। जैसे कि अहम् अहंकार, मान-अभिमान-स्वमान, गर्वरस-*गारवता।*

इस मिठास में 'मैंने किया', 'मैं कर रहा हूँ' बोलते ही कर्तापन का गर्वरस उत्पन्न हो जाता है। वह नहीं करता है फिर भी ऐसा मानता है कि यह 'मैं कर रहा हूँ'। सिर्फ यही एक रस ऐसा है कि जिसे छोड़ना किसी को पसंद नहीं है। जिसके मूल में कर्तापन की भ्रांति की बिलीफ बैठी है। इसका जोखिम समझाते हुए दादाश्री कहते हैं कि, 'गर्वरस अगले जन्म के बीज का कारण है। जिसके कारण यह संसार खड़ा हो जाता है'।

प्रस्तुत अंक में गहराई से, गर्वरस किसे कहते हैं, उसकी लाक्षणिकता, उदाहरण, जोखिम और उसे निर्मूल करने की ज्ञानरूपी चाबियाँ विस्तृत रूप से सरल भाषा में व्यक्त हुई हैं तथा बताया है कि किस तरह से यह गर्वरस साधक की आत्मसाधना में बाधक कारण बनकर आवरण लाता है। यह अति आवश्यक है कि उसे समझकर उसे निर्मूल करने का पुरुषार्थ शुरू हो जाए। इस पुरुषार्थ में अत्यंत महत्वपूर्ण यही है कि नफा पाने के बजाय नुकसान कैसे रोका जाए। यहाँ परम पूज्य दादाश्री की वाणी को समझते रहने से कुछ जागृति उत्पन्न हो और मिठासवाले दोषों को पहचानने का नया दृष्टिकोण मिले तथा उनके सामने जागृति रखकर यथार्थ परिणाम पा सकें, यही हृदयपूर्वक प्रार्थना है।

**जय सच्चिदानंद**

## पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

# कर्तापन की छाया में पनपता मीठा रस, 'गर्वरस'

### कर्तापन के अहंकार से उपजता गर्वरस

**प्रश्नकर्ता :** दादा, जब हम इस संसार व्यवहार में कोई भी अच्छा काम करते हैं, तो काम करने का गर्व हो जाता है कि 'यह मैंने किया'। उसका क्या कारण है?

**दादाश्री :** यह सब तो शरीर करता है, शरीर के 'स्पेयरपार्ट्स' (विभाग) करते हैं और अहंकार सिर्फ 'इगोइज़म' ही करता है कि 'मैंने किया'! 'मैंने किया'! वह नहीं जाता। 'मैं कर रहा हूँ', वह नहीं जाता। इसमें से गर्वरस पैदा होता है और उसी के आधार पर जी रहा है। 'मैंने किया, मैंने दु:ख भुगता, मैंने सुख भोगा', ऐसा गर्वरस चख लेता है। जिसका यह गर्वरस गया, वह (संसार से) छूटा। अनंत अवतार से यह गर्वरस क्यों चख रहा है? क्योंकि कभी भी आत्मरस चखा ही नहीं है।

जहाँ तक इस जगत् में 'मैं कर रहा हूँ, मैं कुछ भी कर सकता हूँ' ऐसी जो-जो गलत समझ है, जब तक वह अज्ञान दूर नहीं होगा, तब तक आत्मा भी नहीं मिलेगा और आत्मा की बातें भी नहीं मिलेंगी।

'मैं ही कर रहा हूँ' वह भास्यमान परिणाम है, यथार्थ परिणाम नहीं है। वास्तव में तो खुद कर्ता है ही नहीं। ऐसा भान चला जाए कि 'मैं कर रहा हूँ' और यह जान जाए कि 'कौन कर रहा है' तो इसका हल आ जाएगा।

### गर्वरस से गले में फाँसी

**प्रश्नकर्ता :** (दादा, इस संदर्भ में वह कहा है न कि) *परपरिणति अपनी कर माने, क्रिया गर्व में घेलो..* वह समझाइए।

**दादाश्री :** करता है कोई और लेकिन हम कहते हैं, 'मैंने किया' वह पर-परिणति कहलाती है। पर-परिणति *'अपनी करी'* मानता है यानी कि यह मेरी स्व-परिणति है अर्थात् मैंने किया। फिर *'क्रिया गर्वे घेलो'* यानी क्रियाओं के गर्व में 'ऐसा किया, वैसा किया और फलाँ किया' और दीवाना होकर घूमता रहता है।

*ज्ञान सकल नय साधन साधो, क्रिया ज्ञान की दासी;*
*क्रिया करत धरतुं हे ममता, यहीं गले में फाँसी।*

'ज्ञानभाव ज्ञान सब मांही,' सभी में ज्ञान यानी उसे आत्मा कहो या ज्ञान कहो वह जीवमात्र में रहा हुआ है। 'शिव साधन सदहीए (श्रद्धीए)।' यह मोक्ष का साधन है, (इस पर) श्रद्धा रखने जैसी है। 'नाम भेख से' सिर्फ भीख माँगने से अपना काम नहीं होगा। भाव सहित रहना चाहिए, वीतरागता से, उदासीन भाव से। *'ज्ञान सकल नय साधन साधो।'* अर्थात् सभी डिग्रियों का ज्ञान, 360 डिग्रियों का ज्ञान होना चाहिए, नहीं तो मतभेद हो जाएँगे। 120 वाले के साथ मतभेद हो जाएँगे। 300 वाले के साथ मतभेद हो जाएँगे। 'क्रिया ज्ञान की दासी'। ज्ञान समझ में आ जाए तो क्रिया अपने

आप पीछे आएगी। *'क्रिया करत धरतुं हे ममता, यही गले में फाँसी।'* सारी क्रियाएँ तो करता ही है लेकिन फिर मानता है 'मैंने यह किया, ऐसा किया और वैसा किया' उससे गले में फाँसी आ गई। करता है कोई और, यानी कि उदयकर्म लेकिन फिर भी कहता है, *'मैं करी'*, उससे गले में फाँसी आई।

क्रिया सिर्फ संसार को स्पर्श करती है क्योंकि अहंकार के सिवा और कोई नहीं कर सकता। अहंकार ही ये क्रियाएँ करता है, जो संसार के लिए हैं। क्रियाएँ तो ऐसा है न कि जिसे देवगति में जाने का शौक है, उनके लिए हैं। बाकी, भगवान ने तो यही ज्ञान बताया है कि 'मेरे कर्म के उदय से हो रहा है, ऐसा समझो'। लेकिन यह तो भूल ही जाता है कि 'मेरे कर्म के उदय हैं' और कहेगा, 'मैं ही कर रहा हूँ'।

**प्रश्नकर्ता :** इसमें (क्रिया में) ममता शब्द आया न, उसका अर्थ बताइए न!

**दादाश्री :** ममता यानी 'मैं कर रहा हूँ' 'मैं कर रहा हूँ' वह ममता कहलाती है। ममत यानी 'मैंने ऐसा किया और वैसा किया'। 'मैं कर रहा हूँ' वह ममता है। *'क्रिया करत है, धरत हे ममता'* 'मैंने किया' ऐसा। 'यही गले में फाँसी', यह फाँसी आई। मुफ्त है ना? सोने की फाँसी बताते हैं, भले ही सोने की लेकिन है तो फाँसी ही न! *'क्रिया, बिना ज्ञान नहीं कबहूँ।'* ज्ञान के बिना क्रिया हो ही नहीं सकती। क्रिया ज्ञान की दासी है। आपने यहाँ से स्टेशन जाने का ज्ञान जान लिया तो क्रिया उसकी दासी ही है। क्रिया यानी बात कहाँ गई? एक बार जानने की ज़रूरत है। यदि उसे नहीं जाना तो वह दासी कहाँ जाएगी! *'क्रिया, ज्ञान दोऊ मिलत रहत है, ज्यूं जलरस जल मांही।'* क्रिया और ज्ञान, जैसे पानी में जलरस रहा हुआ है, उसी प्रकार ज्ञान में क्रिया रही हुई है ही।

अध्यात्म, वह क्रिया नहीं है, वह तो दृष्टि है। जगत् के लोगों के पास संसार दृष्टि है। 'क्रमिक मार्ग' क्रियावाला है जबिक 'अक्रम मार्ग' समझने का मार्ग है। और समझ से शांत करना है। 'अक्रम' वह क्रिया मार्ग नहीं है, 'समभाव से *निकाल*' करने का मार्ग है। 'अक्रम ज्ञान' स्वयं ही क्रियाकारी है। पूरे जगत् के लोग मन-वचन-काया की अवस्था को खुद की क्रिया मानते हैं। 'रियली स्पीकिंग' (वास्तव में) 'खुद' किंचित्मात्र भी कर्ता स्वरूप है ही नहीं। सब अज्ञानदशा के स्पंदन हैं।

## कर्तापन ही इगोइज़म है

अब वास्तव में मनुष्य कर्ता है या नहीं, आपको क्या लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** है और नहीं भी।

**दादाश्री :** किस भाग में है और किस भाग में नहीं है?

**प्रश्नकर्ता :** यदि ज्ञान से माने तो खुद नहीं कर रहा है और अज्ञान से, जड़ रूप से जो होता है, उसमें यदि खुद ऐसा माने कि 'मैं कर रहा हूँ' तो है।

**दादाश्री :** लेकिन आपको क्या लगता है? अभी आपका अनुभव क्या कहता है।

**प्रश्नकर्ता :** अभी तक जो कक्षा है उस अनुसार तो ऐसा लगता है कि कर ही रहा है!

**दादाश्री :** जो-जो क्रियाएँ की जाती हैं, वे सभी प्रकृति के नाच हैं। प्रकृति नाचती है और खुद कहता है कि, 'मैंने किया'। इसे गर्व कहते हैं। यही इगोइज़म है।

## अहंकार बंद करना है आसान

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन इस कर्तापन के साथ अहम् का भाव जुड़ा है।

**दादाश्री :** हाँ! तो?

**प्रश्नकर्ता :** ये जो संसारी जीव हैं ना, इन्हें कर्तापन या जो कुछ अहम् होता है, उसे खत्म करना कोई आसान बात नहीं है।

**दादाश्री :** नहीं, सब से आसान बात यही है। सब से सहज चीज़ है, अहंकार बंद करना! क्रोध-मान-माया-लोभ बंद करना, यह सब से सहज चीज़ है। बाकी, कष्ट उठाने से तो कभी भी क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं जाएँगे। चाहे कितने ही कष्ट उठाए, चाहे जितने कष्ट उठाए तब भी यह अहंकार नहीं जाएगा।

## अहंकार, मान, अभिमान, गर्व.. एक नहीं

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मान लीजिए कि मैंने बहुत अच्छा ऑपरेशन किया और कहूँ कि 'बहुत अच्छा ऑपरेशन किया' तो लोग कहेंगे कि 'यह तो बहुत अभिमानी है'।

**दादाश्री :** हाँ, ऐसा कहने पर अभिमानी कहते हैं लेकिन इसमें मूल चीज़ अहंकार है।

**प्रश्नकर्ता :** अहंकार, मान और अभिमान, इनमें क्या फर्क है? वह फिर मान में से ही अभिमान जन्म लेता होगा न?

**दादाश्री :** नहीं। अभिमान कब जन्म लेता है? ममता हो, तब अभिमान जन्म लेता है। अहंकार अलग दशा है और अभिमान अलग दशा है। लोगों को कुछ भान तो है ही नहीं, वास्तव में भान नहीं है। कुछ भी बोलते रहते हैं!

अहंकार किसे कहना है, अभिमान किसे कहना है, मान किसे कहना है, गर्व किसे कहना है, ऐसे तो तरह-तरह के बहुत शब्द हैं। लोग तो गर्व और *गारवता* (संसारी सुख की ठंडक में पड़े रहने की इच्छा), वगैरह सब खुद की ही भाषा से समझते हैं न? अभिमान को गर्व कहते हैं। ऐसे हैं लोग।

## अहंकार नासमझी से, अभिमान समझ-बूझकर

**प्रश्नकर्ता :** तो दादा, अहंकार और अभिमान में क्या फर्क है?

**दादाश्री :** अभिमान और अहंकार में क्या फर्क है? 'मैं चंदूभाई', वह अहंकार है। जहाँ आप नहीं हो, वहाँ आरोपण करते हो कि यह मैं हूँ, वह अहंकार है। और यह मेरा बंगला, यह मेरी मोटर, ऐसा दिखाए, वह अभिमान! चीज़ें तो उसके पास हैं, लेकिन उनका आरोपण करके, गर्वरस चखने के लिए खुद प्रदर्शन करना, वह अभिमान कहलाता है। तो फिर सफेद बाल क्यों नहीं दिखाते? 'देखो, मेरे सफेद बाल आ गए, देखो!' लेकिन अभी तो लोग काले कर लाते हैं वापस, हं! रंग लेते हैं! अर्थात् अहंकार तो नासमझी से हो गया है और अभिमान तो समझदारी से। खुद गर्वरस लेता है कि 'देखो, यह देखो, यह मेरा बाग देखो, यह देखो, वह देखो।' तब हम जान जाते हैं कि अभिमान चढ़ा है इसे।

अहंकार, जब ममता सहित हो तब अभिमान खड़ा हो जाता है। कोई भी ममता, चाहे किसी भी प्रकार की! यानी किसी भी प्रकार की ममता सहित है तो वह अभिमान हुआ। जब सिर्फ अहंकार हो, ममता रहित हो, तो वह अहंकार कहलाता है।

अहंकार तो निकाला जा सकता है जबकि अभिमान तो महादु:खदाई है। कुदरत का धंधा क्या है? अभिमान को उतारने का ही धंधा है। अभिमान बढ़ा कि गिर ही जाता है। लगाती है झापट, ऊपर से! अहंकार में हर्ज नहीं है।

अभिमान किया कि जाने की तैयारी हुई।

नम्रता रखनी चाहिए। जैसे-जैसे हमारे पास विशेष सांसारिक साधन हों न, वैसे-वैसे नम्रता आनी चाहिए।

## पौद्‌गलिक वेट को अपना मानना, वही अभिमान

अभिमान आपको समझ में आया न? कि पौद्‌गलिक 'वेट' को खुद का 'वेट' मानना। 'मैं बड़ा हूँ' ऐसा मानना, और सोने के आभूषण, घड़ी, घर वगैरह सबकुछ पौद्‌गलिक 'वेट' हैं और इन्हें खुद का 'वेट' मानना, वह है अभिमान! इस बंगले के 'वेट' को वह खुद का 'वेट' मानता है। लोग तो, 'ये मेरे बंगले देखो और यह देखो, वह देखो, यह मेरा बंगला कितना सुंदर है', ऐसा बोले तो कोई कहेगा कि 'अहंकार बोल रहा है'। कोई कहेगा, 'यह अहंकारी है'। नहीं, वह अभिमानी कहलाएगा। चीज़ें तो उसके पास हैं, लेकिन उनका आरोपण करके, गर्वरस चखने के लिए खुद प्रदर्शन करना, वह अभिमान कहलाता है। अभिमान में तो, वह रस भी बहुत मीठा होता है। 'ये मेरे बंगले' ऐसा कहते ही तुरंत मिठास बरतती है। तब फिर उसे 'हेवमोर' (आइस्क्रीम की ब्रान्ड) की आदत पड़ जाती है।

हिताहित का भान ही नहीं है, उसका कारण यह है कि अजागृति है। संपूर्ण जागृति बरते, तब खुद से एक भी भूल नहीं होती! एक भी भूल हो, तो वह अजागृति है। दोष खाली किए बिना निर्दोष नहीं बन सकते!

## अहंकार की यात्रा शून्य की ओर

हाँ, जब तक हमें 'ज्ञान' नहीं हुआ था, तब तक देहाभिमान नहीं गया था। बल्कि जो पाव सेर था न, वह सवा सेर हो गया। जन्म हुआ तब पाव सेर था, फिर जैसे-जैसे बड़ा हुआ वैसे-वैसे सवा सेर होता गया। पाव सेर था, वह भी काटता था तो क्या सवा सेर नहीं काटता होगा?!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उसमें आपने जो कहा कि देहाभिमान, पाव सेर से सवा सेर हो गया, तो फिर उसमें से शून्य किस तरह से हुआ?

**दादाश्री :** अचानक ही! मैंने तो इसमें कुछ भी नहीं किया। 'दिज़ इज़ बट नैचुरल' हो गया। इसीलिए मैं लोगों से कहता हूँ कि नकल करने जैसा नहीं है यह। 'नैचुरल' है, फिर इसमें तू क्या करेगा? अब मेरे पास आ, मैं तुझे रास्ता दिखाऊँगा। मुझे रास्ता मिल गया है। बाकी, मैं जिस रास्ते से गया हूँ, उस रास्ते से तू करने गया तो मारा जाएगा क्योंकि मेरा तो पाव सेर के बदले सवा सेर हुआ तो मुझसे सहन नहीं हो रहा था। वे दिन कैसे निकाले, वह तो मैं ही जानता हूँ।

**प्रश्नकर्ता :** वह कहा है न, 'देहाभिमान था पाव सेर, विद्या पढ़ने से बढ़ा सेर और गुरु बना तब मन (चालीस किलो) में गया।' अब उसमें से शून्य पर किस तरह आया जाए, वही महत्वपूर्ण है।

**दादाश्री :** अब इस 'ज्ञान' के बाद आपका पुरुषार्थ दिन-रात किस ओर जा रहा है? शून्य की ओर जा रहा है। पहले क्या होता था? कि मन से दो मन होता था, उस ओर जाता था। अब शून्य की ओर जा रहे हो। उसके लिए अगर आप ऐसा कहो कि 'अब क्या उपाय है?' तो भी उससे कुछ नहीं होगा। यानी अभी जो है, वह सही ही है। शून्य की ओर जा रहा है, और वह हो ही जाएगा!

## फर्क, गर्व और अभिमान में

**प्रश्नकर्ता :** क्या गर्व और अभिमान में कोई अंतर है?

**दादाश्री :** बहुत अंतर है। गर्व तो किसे कहते हैं कि 'यह मैंने कैसा अच्छा किया है!' तब मैं समझ जाता हूँ कि यह, इसे करने का गर्व है। वकील कहता है, 'मैंने तुझे किस तरह जिताया वह मैं ही जानता हूँ। तुझे अक्ल नहीं है न!' इसे गर्वरस लेना कहते हैं, यह अभिमान नहीं कहलाता। समझ में आया न आपको?

**प्रश्नकर्ता :** स्व-प्रशंसा और गर्वरस दोनों एक ही हैं न?

**दादाश्री :** नहीं! स्व-प्रशंसा अर्थात् कोई कहे कि, 'तू बहुत समझदार है, और तू बहुत लायक इंसान है, और तेरे जैसा इंसान कहाँ से मिलेगा!' वह स्व-प्रशंसा! ऐसा कहने पर फिर बाकी सबकुछ भूल जाता है। आपको पूरा दिन काम करवाना हो तो वह करता भी है। और गर्वरस अर्थात् 'मैंने कितना अच्छा किया, कैसे यह किया'। जो भी काम किया हो न तो 'कितना अच्छा है', यों वह उसका रस चखता है, वह गर्वरस!

## 'मैंने किया', वह कहलाता है गर्व

'इगोइज़म' किसलिए घुसा है? अज्ञानता के कारण। किसकी अज्ञानता? यह सब कौन कर रहा है, उसकी अज्ञानता है। इसलिए नरसिंह मेहता क्या कहते हैं? *''हूँ करूँ, हूँ करूँ ए ज अज्ञानता, शकटनो भार ज्यम श्वान ताणे, सृष्टि मंडाण छे सर्व ऐणी पेरे, जोगी जोगेश्वरा कोक जाणे।''*

क्या गलत कह रहे हैं इसमें नरसिंह मेहता? जबकि कई लोग कहते हैं कि, 'मैंने यह किया, मैंने स्वाध्याय किया, मैंने तप किया, मैंने जप किया' तो कौन सी बात सही है? इसलिए 'मैं करता हूँ, मैं करता हूँ' यह अज्ञानता है। कैसे प्राप्ति करेगा मनुष्य? और गर्व क्या है? कि जहाँ खुद नहीं करता है वहाँ पर कहता है, 'मैंने किया'। वह गर्व है। खुद करता नहीं है, 'इट हेपन्स' है।

## पाव रतल पर अभिमान, 40 रतल पर गर्वरस

**प्रश्नकर्ता :** दादा, इसे और विस्तार से समझाइए न!

**दादाश्री :** अभिमान और गर्व दोनों आमने-सामने तराजू में रखें तो कितना होगा? एक तरफ तराजू में गर्व रखें और एक तरफ अभिमान रखें तो क्या होगा? अभिमान एक पाउन्ड होगा और गर्व चालीस पाउन्ड होगा।

**प्रश्नकर्ता :** किस तरह से? वह समझाइए।

**दादाश्री :** ऐसा है, लोग तो अभिमान को नहीं समझते, गर्व को नहीं समझते। गर्व का मतलब अभिमान नहीं है। अभिमान शब्द अलग है, गर्व अलग, अहंकार भी अलग।

**प्रश्नकर्ता :** तो गर्व अर्थात् मैं पद?

**दादाश्री :** नहीं। 'मैं' पद का मतलब अहंकार है। 'मैं चंदूभाई हूँ' वह अहंकार है। शायद आपमें अभिमान नहीं भी हो, गर्व भी नहीं हो, जहाँ खुद नहीं है वहाँ 'मैं हूँ' ऐसा मानना, वह है मैं पद। जो स्व-पद को चूक गए हैं, वे मैं पद में हैं। लेकिन गर्व क्या है? गर्वरस तो बहुत गाढ़ होता है। अभिमान तो भोला रस है बेचारा, पाव पाउन्ड! जबकि गर्वरस तो है चालीस पाउन्ड!

## दुनिया का सब से मीठा रस है गर्वरस

**प्रश्नकर्ता :** इस गर्वरस को ज़रा उदाहरण देकर समझाइए।

**दादाश्री :** फिर हम पूछें, 'साहब, चार सामायिक आपने की है!' तब वह कहता है, 'और कौन है करनेवाला? मैं ही हूँ न करनेवाला!' तब हम समझ जाते हैं न कि इसे कितना कैफ है?! मन में खुद को न जाने क्या ही मान बैठता है। लेकिन दूसरे दिन हम पूछें, 'क्यों, आज कितनी सामायिक

की?' तब वह कहेगा, 'आज तो पैर दु:ख रहे हैं। नहीं की।' वर्ना कहेगा, 'मेरा सिर दु:ख रहा है।' तो कल सामायिक पैर ने की थी या आपने की थी? किसने की थी? यदि आपने की थी तो पैर का बहाना मत बनाओ। यह तो पैर ठीक हैं, सिर ठीक है, पेट में नहीं दु:ख रहा है इसलिए सामायिक हुई। सबकुछ 'रेग्युलर' हो, सभी संयोग सीधे हों, तब हो पाती है। उसमें से आप अकेले ही क्यों सिर पर ले लेते हो?! यानी कि यह परसत्ता ने किया, उसमें आपका क्या? यों सिर पर लेता है या नहीं लेता?

यानी बस गर्वरस चखना है। यह रस एक प्रकार का ऐसा मीठा रस है, यह गर्वरस चखना है और गर्वरस की वजह से यह संसार है। दारू की वजह से, बीड़ियों की वजह से या चाय की वजह से यह संसार नहीं है, लेकिन इस गर्वरस से है। सिर्फ यही रस ऐसा है कि जिसे छोड़ना किसी को भी अच्छा नहीं लगता।

## 'मैं कर रहा हूँ', वह है गर्वरस

इस जगत् में जो-जो क्रियाएँ दिखाई देती हैं, वे सब, जो *पूरण* की गई थीं, वही *गलन* हो रही हैं, मनुष्य का उनसे कोई लेना-देना नहीं है। उसी में वह अहंकार करता है कि 'मैंने सामायिक की', उससे हिसाब बँध गया! झपट में आ गया! गर्वरस में ही मज़े करता रहता है!

अब, यह गर्वरस क्या है? व्याख्यान देने के बाद महाराज कहें, 'कितना अच्छा व्याख्यान दिया आज!' वह गर्व है। उसे सही माना, वही गर्व है। 'मैने यह किया, वह किया' वही गर्व कहलाता है। ऐसा करते ही गर्वरस उत्पन्न हो जाता है, यह जो कर्तापन का गर्वरस उत्पन्न होता है, उसे चखने पर उसे मज़ा आता है। वह खुद नहीं करता है लेकिन ऐसा मानता है कि 'यह मैं कर रहा हूँ' इसलिए गर्वरस उत्पन्न होता है और उसे लेकर फिर वह ऐसा कहता रहता है कि 'मैं कर रहा हूँ'।

## आरोपित भाव करके गर्वरस चखता है

लेकिन यह तो 'इगोइज़म' करता रहता है सिर्फ। यह सबकुछ कर रहा है, 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' लेकिन 'खुद' कहता है, 'मैं कर रहा हूँ'। वह है गर्वरस! अभिमान में वह ऐसा नहीं जानता कि 'इन सब का कर्ता मैं हूँ' और गर्वरस का मतलब तो ऐसा मानता है कि 'मैं कर रहा हूँ'। एक का कर्ता अर्थात् ऐसा मानता है कि 'पूरे ब्रह्मांड का कर्ता भी मैं ही हूँ'। इसलिए गर्वरस तो बहुत आगे तक पहुँचता है। कोई गर्व करता है? अरे, सभी बातों में गर्व रहता है। 'मैं कर रहा हूँ' इसका भान, वह सब गर्वरस कहलाता है।

गर्व क्या है? आपको समझाता हूँ। कोई आपसे कहेगा, 'मैंने चार सामायिक की'। उस घड़ी उसके मुँह पर यों बहुत आनंद दिखाई देता है। 'मैंने चार सामायिक की' कहते ही यों 'टाइट' हो जाता है। और जब हम पूछें, 'इसने कितनी सामयिक की?' तब वह कहता है, 'इससे नहीं होती। एक ही की है इसने।' और जिसने एक सामायिक की हो, उस पर दया खाता है। कहेगा, 'इस बेचारे से हो नहीं पाता'। पहले दया आती है और फिर तिरस्कार। बल्कि इसमें स्पर्धा की उठापटक रहती है। एक तो यह, और दूसरा 'मैंने की', उसका गर्व रहता है, गर्व चखता है। यानी गर्वरस से है, वह अपनी ही भूल है न?! उसमें भगवान क्या करें?!

वास्तव में हम लोग कर्ता नहीं है। कर्ता दूसरी ही चीज़ है। हम आरोप करते हैं, आरोपित भाव करते हैं कि 'मैं कर रहा हूँ यह'। उसका गर्वरस चखने को मिलता है। ऐसा गर्वरस तो बहुत

मीठा लगता है वापस, और उसी से कर्म बंधते हैं। गर्वरस चखा, आरोपित भाव किया कि कर्म बंधा।

## 'मैंने किया' के गर्वरस की जोखिमदारी

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन जब हम कर्ता नहीं हैं, तो जो कर्म हम अवश्यरूप से करते हैं, उसके फल हमें क्यों भुगतने पड़ते हैं?

**दादाश्री :** 'यह मैंने किया'। खुद कर्ता नहीं है फिर भी ऐसा कहता है 'मैंने किया', उसका गर्वरस चखता है इसलिए फिर उसकी ज़िम्मेदारी रहती है। हमें ऐसा गर्वरस नहीं रहता इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी नहीं आती।

राजा क्या कहता है कि 'मैंने लाखों लोगों को मार डाला'। राजा तो सिर्फ अहंकार ही करता है, गर्वरस लेता है। वह तो, जो युद्ध में थे उन्होंने मारे। राजा बिना बात के जोखिमदारी लेता है! मारे होते हैं उन सैनिकों ने, फिर भी राजा कहता है कि 'मैंने मारे'। बेकार ही ऐसा बोलता है। इन लोगों को कैसा फल मिलता है? ऐसा करने से, जो मारनेवाले हैं, वे छूट जाते हैं। नियम क्या है कि जो अहंकार ज़िम्मेदारी लेता है, उसी के सिर जोखिमदारी आती है। 'मैंने मारा' कहे तब (कुदरत) कहती है 'ले'। अब इस गुप्त तत्व को लोग समझते नहीं हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** और जोखिमदारी के बारे में तो सोचते ही नहीं हैं।

**दादाश्री :** भान ही नहीं रहता न! यह तो ऐसा ही जानता है कि ओहोहो! इस दुनिया में मेरी इज्जत बढ़ गई। हाँ, एक तरफ इज्जत बढ़ी लेकिन इसका जो फल आएगा, वह तुझे अकेले को ही भुगतना पड़ेगा। जो अहंकार करता है, उसे उसका फल मिलता है। होता है अपने आप, कर्मोदय ने इसे राजा बनाया लेकिन यह अहंकार करता है कि 'मैने किया!' तो मार पड़ती है।

## झंझट सिर्फ इतनी है, 'मैं कर रहा हूँ'

**प्रश्नकर्ता :** तो मेरे खुद के संसार का मैं किस तरह और कितने अंश तक कर्ता हूँ?

**दादाश्री :** अब यह खुद जगत् का कर्ता नहीं है फिर भी ऐसा मानता है कि 'मैं कर रहा हूँ'। भ्रांति से ऐसा मानता है कि 'यह सबकुछ मैं कर रहा हूँ'। मैं संडास हो आया, रात को मैं सोया, मैं उठा। अब इस वर्ल्ड में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिसमें सोने की शक्ति हो। उठने की शक्ति हो। ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिसे संडास जाने की शक्ति हो। मैंने जब फॉरेन के डॉक्टरों को इकट्ठा करके ऐसा कहा तब सभी हिल गए। तब मैंने कहा, 'जब आपका रुक जाएगा तब पता चलेगा'। संडास जाने की शक्ति तो, जब तक कुदरत ने आपको दी है तभी तक है। और जब रुक जाए तब? तब पता चलता है न कि अपनी शक्ति नहीं थी?

ज़रा सोचो तो सही! तब कहने लगे, 'यस, यस'। मैंने कहा, 'फिर यह बताओ कि आपने हासिल क्या किया?' तब कहने लगे, 'हम सब को ठीक कर देते हैं'। मैंने कहा कि 'आप तो निमित्त हो भाई, आप भला कौन हो बचानेवाले? आप नए कहाँ से पैदा हुए? फिर आपकी बहन क्यों मरनी चाहिए? आपके पिता जी क्यों मरने चाहिए?' आए बड़े ठीक करनेवाले।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यदि फिर निर्धारित ही है तो फिर हम जो विज्ञान के प्रयोग करते हैं, उनका कोई अर्थ ही नहीं है?

**दादाश्री :** वह ऐसा ही है। यह तो सिर्फ इतना ही है कि इगोइज़म करके बीच में यह खाता

है, बीच में इगोइज़म है इसलिए यह गर्वरस चख लेता है। आपको क्या लगता है? अपनी शक्ति नहीं है ऐसा पता चल जाता है न? इसमें कौन सी शक्ति है? अत: यह सब इट हेपन्स, हो रहा है और ऊपर से आप कहते हो कि 'मैं कर रहा हूँ' बस इतनी ही झंझट है।

नीम का पत्ता-पत्ता, डाली-डाली कड़वे होते हैं, उसमें उसका क्या पुरुषार्थ? वह तो जो बीज में पड़ा है, वही प्रकट होता है। उसी प्रकार मनुष्य अपने प्राकृत स्वभाव से व्यवहार करता है और सिर्फ अहंकार ही करता है कि 'मैंने किया'।

## जब तक गर्वरस चखेगा, तब तक मोक्ष रहेगा दूर

अब, इसके कर्तापन का रस चखते हैं इसलिए जी पाते हैं ये लोग। अभी ये सभी साधु संन्यासी किस पर जीते हैं? वे क्या खाते हैं? गर्वरस पीकर ही जीते हैं ये सभी। अभी भी शास्त्र पढ़नेवाले बड़े-बड़े लोग होते हैं लेकिन 'मैंने किया' उसी आधार पर जीते हैं, उसी की मस्ती में!

इस गर्वरस के सामने उन्हें कुछ अच्छा ही नहीं लगता। गर्वरस बहुत पसंद है उसे। कहेगा, 'मैंने त्याग किया, स्त्री का त्याग किया, करोड़ों रुपए छोड़कर आया हूँ, तो मोक्ष के लिए ही आया होऊँगा न!' तब मैंने कहा, 'किसलिए, वह तो आप समझो। आपको अभी तक कौन सा रस चखना पसंद है, उसका क्या पता? रुपए का रस अच्छा नहीं लगता लेकिन दूसरे तो तरह-तरह के रस होते हैं न और तरह-तरह की कीर्ति होती है न।' जब तक गर्वरस चखते हैं, तब तक किसी को मोक्ष की बात नहीं करनी चाहिए।

## गर्वरस चखकर मज़े लेता है

गर्व अर्थात् 'जहाँ खुद नहीं करता है' वहाँ पर ऐसा मानना कि 'कर रहा है'। उस समय रस उत्पन्न होता है अंदर, गर्वरस उत्पन्न होता है। वह बहुत मीठा लगता है, इसलिए उसे मज़ा आता है कि 'मैंने किया'!

**प्रश्नकर्ता :** और वातावरण भी ऐसा है कि निमित्त को पकड़ लेते हैं, लोग हार पहनाकर सम्मान करते हैं, मानपत्र देते हैं कि 'आपने ही किया।'

**दादाश्री :** हाँ, 'आपने ही किया, आपने ही किया' करके चिपट पड़ते हैं।

किसी का अच्छा किया हो न तो उसका गर्व लेता है। फिर खराब किया हो तो उसका भी गर्व लेता है। यानी कि 'अच्छे-अच्छों को मार डाला है,' उसका गर्व लेता है। 'अच्छे-अच्छों को मैंने धनवान बना दिया है, पैसेवाला बना दिया है,' ऐसा गर्व लेता है।

किसी जगह पर पान नहीं मिलता और कोई पान ले आए तो दो-तीन बार गा उठता है, 'किसी जगह पर नहीं मिल रहा था, हं!' यह गर्वरस। 'मैं था तो ले आया, नहीं तो ठिकाना ही नहीं पड़ता' कहेगा। ऐसे गर्वरस चखता है। बहुत मज़ा आता है।

## अहंकार से चखता है गर्वरस

गर्वरस की वजह से कहता है 'मैंने यह छोड़ दिया, मैंने यह छोड़ दिया। आलू छोड़ दिए। कंदमूल तो नाम मात्र भी नहीं, रोज़ चौविहार करता हूँ'। तो इसमें भगवान महावीर पर क्या उपकार? तेरे खुद के लिए कर रहा है। जैसे भगवान पर उपकार नहीं कर रहा हो? रोज़ भगवान द्वारा बताया गया चौविहार करता हूँ?' अरे भाई, लेकिन भगवान को इससे क्या? तुझे लाभ होगा। चौविहार करेगा तो रात को मुँह में जीवजंतु नहीं जाएँगे, दूसरा कुछ नहीं जाएगा। भोजन अच्छी तरह पचेगा। यह तो

साइन्स है, इससे भगवान को क्या लेना-देना? शरीर अच्छा रहेगा तो तुझे फायदा है। दिन-दिन में खा ले न चुपचाप। दिन में खा लेने से उजाले में पचता भी अच्छी तरह से है। सूर्यनारायण की उपस्थिति में भोजन पच जाता है। एक तो पाचन शक्ति अच्छी रहती है, दूसरा अंदर पेट में जीवजंतु नहीं जाते। इससे कोढ-वोढ (रक्तपित्त वगैरह) नहीं होते। तरह-तरह के रोग उत्पन्न होते हैं न? लेकिन अहंकार गर्वरस चखे बिना नहीं रहता न!

## सूझ से हल होते कार्यों के लिए खुद खाता है गर्वरस

**प्रश्नकर्ता :** हम जब कोई काम करते हैं न तब उसमें कभी बुद्धि से काम होता है और कभी कई लोगों में सूझ होती है, यानी अंतरसूझ। इसलिए मैंने मेरा कहा है कि 'मुझे ऐसी कुछ सूझ पड़ जाती है और तुरंत काम हो जाता है।' लेकिन सूझ पड़ने पर फिर वह खुद मानता है कि 'मुझे यह आता है, मैंने किया।' एक्चुअली (वास्तव में तो) सूझ करवाती है। खैर ऐसा तो होता है लेकिन फिर गर्वरस चखता है कि 'मुझे कितना अच्छा आता है!' जैसा किसी को नहीं आता वैसा मुझे आता है!' और ऐसा है, वैसा है वगैरह। फिर अंदर यह गर्वरस मीठा लगता रहता है। और मार गिराता है हमें, आपको। फिर उससे पूरा अहंकार रहता है।

**दादाश्री :** इसमें गर्वरस चख लेते हैं आप। इस गर्वरस की वजह से अहंकार चिपका रहता है। यह रस छूट जाए न तो इसे (चंदू को) डाँटना ताकि आपको यह रस न आए। यानी गर्वरस का मज़ा न आए। मज़ा चला जाएगा लेकिन इससे (चंदू से) तो अलग हो जाओगे न। तभी दादा की आज्ञा का पालन हो पाएगा न!

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** 'मैंने ठीक किया' यों गर्वरस खाता है। मन में आनंद किसलिए होता है? उसे ऐसा लगता है 'कढ़ी मैंने बनाई,' और दूसरे दिन कढ़ी बिगड़ जाए तो कहती है कि 'मैं क्या करूँ?'

यह सब खुद नहीं करते हैं, यह तो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्सियल एविडेन्स करते हैं। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार, हाथ-पाँव सब मिलकर करते हैं। नहीं तो यह भी याद न आए कि राई कहाँ रखी है, यह तो खुद गर्वरस भोगता है। गर्वरस बहुत मीठा लगता है।

जब कमाता है तब, 'मैंने कमाया' कहकर गर्वरस भोगता है और नुकसान हो जाए तब दुःखी हो जाता है। सारे दुःख आरोपण करने की वजह से हैं। भगवान तो परमानंदी हैं और वही खुद का स्वरूप है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, बहुत समय बाद फिर ऐसा लगता है कि 'फाइल-वन ने किया है न!' यों दोनों तरह से होता था। वह लगता तो है, चिपकता तो है। 'हाँ, मैंने किया था' ऐसा! मीठा लगता है।

**दादाश्री :** वही गर्वरस है और वह आपको छूटने नहीं देगा।

## ज्ञानी की बात को बुद्धि से मत छानना

अब यह सब तो चलता ही रहेगा। उसमें वह खुद चलाता ही नहीं है। यह तो ज़रा गर्वरस चखने की आदत पड़ी हुई है न! इसलिए दूसरे की आठ सौ की तनख़्वाह देखकर मन में ऐसा होता है कि, 'हमें तो अठारह सौ मिलते हैं तो हमें कोई परेशानी नहीं है। इसे तो आठ सौ ही मिलते हैं!' यों शुरू हो जाता है! जैसे अठारह सौ से ऊपर कोई *ऊपरी* है ही नहीं न! जहाँ *ऊपरी* होता है न, वहाँ स्पर्धा रहती ही है! वहाँ खड़े रहने का कारण ही क्या है हमारे पास? यह क्या 'रेस-कोर्स' में आए हैं?! हम क्या 'रेस-कोर्स' के घोड़े हैं?!

उसके बजाय तो वहाँ कह दे न, 'मैं बिल्कुल मूर्ख हूँ।' हम तो कह देते हैं न, कि 'भाई, हममें अक्ल नहीं है, हम में इस सारे व्यवहार की समझ नहीं है न!' और साफ-साफ ऐसी बात ही कर देते हैं न! तभी तो वे हमें छोड़ेंगे न! ऐसा कहेंगे तभी दुःख मुक्त हो पाएँगे न!!

और ऐसा है, हमें तो दाढ़ी बनाना भी नहीं आता। तभी तो ब्लेड से छिल जाता है न! और हमने ऐसा इंसान देखा ही नहीं है जिसे दाढ़ी बनानी आती हो! तो ये मन में न जाने क्या 'इगोइज़म' लेकर घूमते रहते हैं! ऐसा तो मेरे जैसा ही कोई कहेगा न? बाकी, सामने तो सारी दुनिया है। थोड़े-बहुत लोग हों तो 'वोट' मिलेंगे, लेकिन यहाँ तो 'वोटिंग' में मैं अकेला ही हूँ। इसलिए फिर मैं शोर नहीं मचाता। चुप रहता हूँ। क्योंकि 'वोटिंग' में सिर्फ मैं ही आता हूँ। बाकी, ऐसी चेतावनी कौन देगा? और मैं कहाँ चेतावनी देने बैठूँ? कैसी दुनिया में आ फँसे हैं।

ये बातें सुनना आपको अच्छा लगता है? बोरियत नहीं होती? और इस बात को छानना मत। छानने मत बैठना। यों ही अंदर डाल देना। नहीं तो आपकी जोखिमदारी आएगी। यहाँ पर तो यह 'प्योर' वस्तु है। उसे बुद्धि से क्या छानना?

## गर्वरस की भूल खत्म करे तो काम हो जाए

पूरा जगत् प्राकृत गुणों में ही रहता है। पूरा जगत् लट्टू छाप है। ये सामायिक-प्रतिक्रमण तो प्रकृति करवाती है और खुद के सिर पर ले लेता है और कहता है कि 'मैंने किया।' तो भगवान से पूछें तो भगवान कहेंगे कि, 'इनमें से तू तो कुछ भी नहीं करता है।' कभी पैर दुःखने लगें तब कहेगा, 'मैं क्या करूँ?' प्रकृति ज़बरदस्ती करवाती है और कहता है कि 'मैंने किया!' और इसी तरह तो वह अगले जन्म के बीज डालता है। यह होता तो है उदयकर्म से और खुद उसका गर्व लेता है। जो उदयकर्म का गर्व ले, उसे साधु कैसे कहेंगे? साधु महाराजों की एक भूल यह है कि वे उदयकर्म का गर्व लेते हैं। यदि ऐसी भूल हो रही हो और इस एक भूल को ही यदि मिटा दें तो काम ही हो जाए! इतना ही देखना है कि महाराज को उदयकर्म का गर्व है या नहीं, दूसरा बाहर का कुछ भी नहीं देखना है।

## कर्मोदय के वक्त बंधन, गर्वरस चखने से

उदयकर्म का गर्व क्या है, इसे समझता है क्या एक भी इंसान?! हिन्दुस्तान में कौन समझ सकता है इसे! यह तो जब हम समझाएँ तब समझ में आता है। शास्त्रों में लिखा है कि 'कर्म के उदय से,' लेकिन कर्म क्या है? उसे समझे बिना किसे कर्म कहेंगे? कर्म का उदय क्या है और कर्म क्या है?

लोग कहते हैं, 'मेरे कर्म के उदय से मुझे ऐसा होता है।' लेकिन उदयकर्म क्या है? और (तू) उदय को क्या समझता है? तब कहता है, 'नहीं साहब ऐसा तो कुछ भी नहीं समझता। लोग कहते हैं इसलिए मैं भी कहता हूँ' साधु महाराज भी ऐसा ही कहते हैं कि 'लोग कहते हैं इसलिए मैं कहता हूँ' अगर कर्म के उदय से होता है तो अब कर्म मत करना। तब कहता है 'कर्म किए बिना कैसे चलेगा? अरे, ये जो कर्म कर रहा है, वह तू नहीं कर रहा। करनेवाला तू नहीं है। तब कहता है, 'नहीं साहब, यह मुझे समझ में नहीं आ रहा।' मैं खुद ही कर रहा हूँ और आप कहते हैं कि नहीं कर रहा, दोनों बातें कैसे मानी जा सकती हैं, इसलिए अगर उसे समझ में आए तो आए। नहीं तो साधु महाराज भी कहते हैं, 'भाई कर्ता तो हैं।' मैंने तप किया, ये सारी सामायिकें मैंने कीं। भगवान से पूछें कि 'यह महाराज साहब ने क्या किया है?' वे कहेंगे 'इस चंदूलाल ने सामायिक की और इन्होंने (महाराज ने) की तो

चंदूलाल छूट जाता है और ये महाराज बंधन में आ जाते हैं।' महाराज साहब पूछते हैं कि 'साहब, मैं क्यों बंधन में आता हूँ? तब कहते हैं, तुम 'ये तप, सामायिक-वामायिक जो करते हो, उसका गर्वरस चखते हो, इसलिए'।

गर्व लेने से क्या हुआ कि गरदन फँस गई। मोक्ष तो न जाने कहाँ रह गया बल्कि तूने तो मोक्ष के लिए लाख जन्मों तक के अंतराय डाल दिए। सामायिक का गर्व किया! संसार का गर्व होता है। कहेगा, 'हम फलाँ जगह पर गए।' ओहोहो, वहाँ जाने में भी गर्व लिया?! जैसे न जाने क्या कमा लिया! जैसे चिंता-टाढ़ खत्म न हो गई हो! इसे गर्व कहते हैं।

## गर्व न करे तो दर्शन खुलेंगे

इन सभी जीवों को भी उदयकर्म का गर्व नहीं मिटता। किसी को कम किसी को ज़्यादा होता है लेकिन उसका गर्व नहीं मिटता।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, उदाहरण देकर समझाइए। यह कुछ समझ में नहीं आया।

**दादाश्री :** मैं कर रहा हूँ' इसका गर्व रहता ही है। 'मैं कर रहा हूँ' यह सामायिक मैंने की' उसका गर्व रहता है। प्रतिक्रमण किया, उसका गर्व रहता है। यह स्वाध्याय किया, उसका गर्व रहता है।

भगवान ने क्या कहा था कि यदि 'साधु-आचार्य उदयकर्म का गर्व न करें तो हमारे दर्शन पाएँगे।' उदयकर्म का गर्व करें और दर्शन पाएँ, ऐसा कभी भी नहीं हो सकेगा।

## नहीं है प्रवेश तब तक, सम्यक्त्व के घेरे में

महाराज क्या कहते हैं? 'मैंने त्याग किया। बीवी छोड़ी, बच्चे छोड़े, घर छोड़ा, करोड़ों रूपये छोड़े।' ऐसा कहते हैं न, उस क्षण गर्वरस चखते रहते हैं।

तो यह गर्वरस बहुत मीठा होता है। सभी भगवान कहते हैं, 'जब तक गर्वरस चखेगा तब तक तू कभी भी सम्यक्त्व के पद में नहीं आ पाएगा।' लाख अवतारों तक तप-त्याग करेगा तब भी जब तक गर्वरस चखता रहेगा, तब तक सम्यक्त्व के दायरे में नहीं आ पाएगा। गर्वरस समझे आप? इसे गर्वरस क्यों कहते हैं? यह सब उदय करता है, फिर भी तू कहता है, 'मैंने किया।'

## मिटा उदयकर्म का गर्व रे

जब कृपालुदेव का यह भान चला गया कि 'मैं करता हूँ,' तब यथार्थ समकित हुआ, तब उन्होंने क्या कहा कि

*'दस वर्षे रे धारा उल्लसी*
*मट्यो उदयकर्मनो गर्व रे,।*
*धन्य रे! दिवस आ अहो।'*

कहते हैं, 'यह धारा दसवें वर्ष उल्लसित हुई और उदयकर्म का गर्व मिटा। कर रहा है उदयकर्म और मानते थे कि 'मैं कर रहा हूँ' हमारा वह गर्व छूट गया।' अब लोग कुछ अलग समझे। बाहर इसका अर्थ अलग ही तरह से होता है लेकिन मैं तो मूल अर्थ को समझ गया कि ये क्या कहना चाहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** इसका अर्थ आप समझाइए न।

**दादाश्री :** हाँ, 'मैं बताता हूँ' यही कहलाता है उदयकर्म का गर्व। 'कौन करता है' यह बात तो अलग है लेकिन 'मैं कर रहा हूँ' वह गर्व तो मिट गया। यह तो सब से बड़ा वाक्य है। इसी को पहला समकित कहा गया है।

उदयकर्म से अस्तकर्म तक कर्म कहलाता है। कर्म का उदय हुआ, तब से लेकर अस्तकर्म तक रहता है। अब उदयकर्म वह खुद के कर्म का परिणाम है, नया कर्म नहीं है यह। इसलिए इसका

गर्व मिट गया। इसे कर रहा है कोई दूसरा और कहता है कि 'मैं कर रहा हूँ'। हमारा वह गर्व मिट गया, जो कि पूरे जगत् को है।

पूरा जगत् उदयकर्म में गर्व रखता है। उसमें कोई भी अपवाद नहीं है। क्योंकि, जब तक खुद 'स्व-स्वरूप' नहीं हो जाता तब तक दूसरी जगह पर है और क्योंकि दूसरी जगह पर है इसलिए गर्व हुए बिना रहेगा ही नहीं।

## जब तक 'रोंग बिलीफ' तभी तक गर्वरस

**प्रश्नकर्ता :** आपकी 'थ्योरी' के अनुसार तो 'व्यवस्थित' चला रहा है, फिर भी गर्वरस होता ही रहता है न, उसमें? स्व-स्वरूप प्राप्ति के बाद भी?

**दादाश्री :** नहीं। गर्व होगा ही नहीं न! गर्व तो, 'मैं चंदूभाई हूँ,' ऐसा 'डिसाइड' होने तक ही गर्व है। जब तक 'रोंग बिलीफ' है, तब तक गर्व है और 'रोंग बिलीफ' गई तो गर्व रहता ही नहीं।

## संयम सुख उपजने से छूटता है गर्वरस

'मैं चंदूभाई नहीं हूँ, चंदूभाई तो सिर्फ ड्रामेटिक है' ऐसा भान होना चाहिए। फिर अंदर संयम बरतता रहेगा और अंदर का आंतरिक संयम बरतने लगे तो फिर गर्वरस नहीं चखता। संयम से इतना सुख उपजता है कि उसे गर्वरस चखने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। यह तो उसे सुख नहीं है, इसीलिए गर्वरस चखता है। किसी भी प्रकार का सुख नहीं है तब, ऐसा यह सुख तो है ही न!

## वाणी की मस्ती से लुप्त, आत्मिक आनंद

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपने कहा था कि वाणी में सुख नहीं लगना चाहिए। तो वाणी में सुख किस तरह लिया जाता है, इसे ज़रा उदाहरण देकर समझाइए न।

**दादाश्री :** जब वह बोलता है न, तब सभी को मज़ा आता है, तो उसे खुद में सुख बरतता है, और वह और भी ज़्यादा बोलता है। उसे कहें कि 'अब बस करो,' तब भी बोलता रहता है। इसलिए क्योंकि उसे सुख बरतता है। इसलिए हमें हमेशा ही, जब भी हम बोलते हैं तब वाणी का सुख बरतता ही है। लेकिन वाणी को हम क्या कहते हैं कि 'यह टैपरिकॉर्डर बोल रहा है।' इसलिए हम छूट जाते हैं। 'टैपरिकॉर्डर बोल रहा है' कहते ही अलग पड़ जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी वह वाणी का गर्वरस लेता है?

**दादाश्री :** हाँ, गर्वरस। वाणी तो ऐसी बोलता है कि सामनेवाला खुश हो जाता है। तब इसे अंदर आनंद होता है। जिससे आत्मा का आनंद चला जाता है। इसे यह चखने की आदत पड़ गई है न!

## गर्वरस की मस्ती में 'मैं' से चिपक जाता है

'यह मैं बोल रहा हूँ, मैं यह कर रहा हूँ' यह तो सिर्फ इतना ही है कि 'मैं' का भूत-कब्ज़ा है, भूत चिपक गया है। 'आप अच्छा बोले' ऐसा सुनते ही 'मैं, मैं' चिपक जाता है। 'मैंने कितना अच्छा बोला!' वह अच्छा बोलने का यश खाते हैं तब खराब भी बोलते होंगे न, तभी तो इसे आप कहते हो न कि 'अच्छा बोला' तो जब खराब लगता है उस समय कौन बोलता होगा?

ये वकील भी कॉर्ट में बोलकर अपने मुवक्कील को जिताते हैं और फिर कहते हैं, 'मैने कैसी प्लीडिंग (जिरह) की थी। तूने सुना था न?' तब वह कहता है, 'हाँ, साहब। बहुत अच्छी प्लीडिंग की थी।' इस तरह वकील भी गर्वरस लेता है। लेकिन यह तो टैपरिकॉर्डर बोलता है, इसमें क्या रुआब मारता है।

एक वकील अपने असील से कहता है, 'आज मैंने तुझे जिता दिया।' तब असील कहता है 'साहब थेंक्स (धन्यवाद)' तब वकील कहता है, 'सिर्फ थेंक्स?' तब उसने तीन सौ रुपये ज़्यादा दिए और फिर दूसरा जो केस था, उसमें हार गया। हारकर वापस आया, तब उस असील ने कहा कि 'साहब, अब आपको थेंक्स कहूँ? तब वकील कहता है, 'नहीं, तू हार गया। तेरा नसीब खराब है।'

लो! खराब प्लीडिंग हुई तब ऐसा कहता है और अच्छी प्लीडिंग हुई तब कहता है 'मैंने की, मैं बोला।' यश खाने की भावना! अपयश के चाहक नहीं बनना है। यश के चाहक! जीत जाए तब गर्व ले लेता है और हारे तब यों उल्टा बोलता है।

कैसा विरोधाभासी वर्तन! इसे जीवन कहेंगे ही कैसे? और अगर नसीब ही होता तो वकील कहाँ गया? जीतने में वकील था और हारने में वकील नहीं? तो नसीब? बड़े आए जितानेवाले! जितानेवाला था तो फिर हरवाता नहीं न! अरे! तू बोल रहा था या दूसरा कोई बोल रहा था? और नसीब को क्यों देखता है? यह तो टैपरिकॉर्डर है लेकिन बेचारे को पता नहीं है कि जीत गया था, वह भी ऑरिजिनल टैपरिकॉर्डर से और हारा वह भी ऑरिजिनल टैपरिकॉर्डर से।

## गर्वरस की मस्ती में भूला भान

हमें तो अच्छी वाणी से भी लेना-देना नहीं और खराब वाणी से भी लेना-देना नहीं। वाणी अच्छी निकली तो भी मेरी नहीं है और खराब निकली तो भी मेरी नहीं। हम तो अच्छी हो तो भी 'मेरी' नहीं कहते और खराब हो तो भी 'मेरी' नहीं कहते। जो निकली वही सही, करेक्ट! हम इसका गर्व नहीं लेते कि 'कितना अच्छा कहा' वगैरह क्योंकि अगर वाणी मेरी नहीं है तो फिर मैं ऐसा कैसे कह सकता हूँ?

इसका मालिकीपन नहीं है। सही जवाब हो या भूलवाला हो लेकिन टैपरिकॉर्डर का। तारीफ करें या खराब कहे, तब भी ओरिजिनल टैपरिकॉर्डर का। इसलिए यदि तुम यश दो तो उसकी हमें ज़रूरत नहीं है क्योंकि टैपरिकॉर्डर बोल रहा है। इससे हमें क्या लेना-देना? और अपयश दो तो भी हमें कुछ लेना-देना नहीं।

और लोगों को तो खुद ज़रा भी अच्छा बोलें न, तो फिर ऐसा गर्वरस चखते हैं कि 'कैसा अच्छा बोला!'! उसी की मस्ती में रहता है, सबकुछ भूल जाता है।

## 'मैंने किया,' यह देता है आधार गर्वरस को

ये सब उसे आधार देते रहते हैं कि, 'मैंने व्याख्यान दिया था, वह कितना सुंदर था।' यों आधार देते हैं।

अगर उससे कहें कि तू (वही) वाक्य दोबारा बोल, तो उसे एक भी वाक्य बोलना नहीं आएगा। वह भाषण दे, उसके बाद उससे कहें कि 'दोबारा बोलो, देखें।' तो वह क्या कहेगा? 'नहीं बोल पाऊँगा।' इसके बजाय तो स्कूल के बच्चे अच्छे कि साहब (मास्तर जी) कहें कि, 'एय दोबारा बोल,' तो वह दोबारा बोल देता है। रटा हुआ होता है न, बच्चों का तो! उससे सभी को गर्वरस उत्पन्न हो जाता है कि, 'मैं कितना अच्छा बोला!' फिर जब गलत बोलता है, तब कहता है 'मैं क्या करूँ'। ऐसा नहीं होना चाहिए। ये जो व्याख्यान देते हैं, वह कौन देता है? आत्मा देता है? आत्मा में वाणी का गुण है ही नहीं। तो फिर तू कैसे बोलेगा? इसलिए वह बात झूठी है कि 'मैं व्याख्यान दे रहा हूँ'।

## गर्वरस से चढ़े नशा

शास्त्रज्ञान तो बहुत जन्मों से पढ़ते आए हैं

लेकिन कुछ हुआ नहीं। इसलिए कृपालुदेव ने कहा है न, 'शास्त्रज्ञान से निबेड़ा नहीं है, अनुभवज्ञान से निबेड़ा है। इसलिए ज्ञानी के पास जा।' पुस्तकों में क्यों सिर फोड़ रहा है और आँखें बिगाड़ रहा है?! और बेकार ही बिना बात के गा रहा है! फिर मन में कैफ बढ़ता जाता है, 'मैं जानता हूँ' उसका कैफ बढ़ता है। वह तो बहुत बड़ा कैफ है। शराबी पर तो एक बालटी पानी डाल दी जाए न, तो तुरंत कैफ उतर जाता है। लेकिन इनका कैफ नहीं उतरता। ऊपर से भगवान आएँ तो भी कैफ नहीं उतरता। भगवान के बारे में भी कल्पना करेगा! क्योंकि, 'मैं जानता हूँ' का कैफ चढ़ा है न! इन लोगों का बेड़ा कब पार होगा?!

इस गर्वरस को चखने से ही कैफ बढ़ता जाता है। फिर कैफ का आदी हो जाता है। तो कैफ किस तरह उतरेगा अब? मोह का जो कैफ चढ़ गया है वह किस तरह उतरेगा?!

और साथ-साथ उसके पीछे फिर मान की भावना! गर्वरस चखने की आदत तो है ही न या गर्वरस चखना छेड़ देते होंगे?! गर्वरस छोड़ते नहीं हैं न! वह तो बहुत मीठा होता है। 'मैंने ऐसा किया और वैसा किया' कहकर गर्वरस चढ़ता ही जाता है। खुद का किया हुआ किसी को कहकर बताता है, उस घड़ी उसे कितना आनंद होता है। बहुत आनंद होता है। नहीं?

अब वह गर्व हमारे पास नहीं है। 'मैंने कोई क्रिया की है,' ऐसा हमें रहता ही नहीं।

## गर्वरस से होते हैं चार्ज, बीज अगले जन्म के

आप जो बोलते हो, व्याख्यान सुनते हो, सब करते हो लेकिन इन सब में चेतन नहीं है। जो व्याख्यान देता है उसमें भी चेतन नहीं है जबकि उसी में पूरा चेतन मान बैठे हैं! 'मैं ही हूँ' और उसी को सुधारते हैं, उसे स्थिर करते हैं। अरे! यह चेतन है ही नहीं। यह तो पावर चेतन है!

आप जिसमें रहते हो, वह दो हिस्सों में है, एक तो निश्चेतन चेतन और दूसरा चेतन, लेकिन आप खुद निश्चेतन चेतन को चेतन मानते हो।

निश्चेतन चेतन मिकेनिकल चेतन है। बाहर का सभी भाग मिकेनिकल है। स्थूल मशीनरी को हैंडल मारना पड़ता है, जबकि सूक्ष्म मशीनरी को तू हैंडल मारकर ही लाया है। अभी ईंधन डालता ही रहता है लेकिन हैंडल नहीं मारना है। सूक्ष्म मशीनरी मिकेनिकल चेतन है लेकिन वहाँ ऐसा गर्व करता है, 'मैंने किया'। उससे चार्ज होता है और अगले जन्म के बीज डलते हैं।

पूरा संसार अचेतन को चेतन मानता है और ऐसा मानता है कि क्रिया में आत्मा है। क्रिया में आत्मा नहीं है और आत्मा में क्रिया नहीं है, लेकिन यह बात कब समझ पाएगा?

## गर्वरस ही आयोजन है

व्यवस्थित तो नियमानुसार है। व्यवस्थित गप्प नहीं है। नियमानुसार मतलब क्या? पिछले जन्म में हमने जो ऑन पेपर अथवा ऑन फिल्म, (भाव रूप से) योजनाएँ घड़ी हैं, उन योजनाओं को परिपक्व होने में लगभग 25-30 साल, किसी को 40 साल लेकिन 100 साल के अंदर सभी योजनाएँ परिपक्व हो जाती हैं। तब तक वे एकदम से रूपक में नहीं आती। इस प्रकार यह (पूर्वजन्म की) योजनाओं के परिपक्व होने पर इस जन्म में हमें फल चखने को मिलते हैं।

हम से सिर्फ योजना ही घड़ी जा सकती है, और कुछ नहीं हो पाता। बाकी अपने आप होता रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** तो ऐसा भी होता होगा न, कि

डॉक्टरी में बोरियत होने लगे तब फिर योजना करता है कि वकील बनने में सुख है तो यह डॉक्टरी छूट जाती है और वकालात ग्रहण हो जाती है! ऐसा होता है?

**दादाश्री :** सारा! जितना-जितना उसने जैसा चित्रित किया है उन चित्रों के अनुसार योजनाबद्ध आयोजन किया गया है। कोई मालिक नहीं है। मरने-वरने का सारा आयोजन खुद के निश्चित किए अनुसार ही आता है। कहता है, 'होस्पिटल तो मुझे स्वप्न में भी नहीं चाहिए,' तो स्वप्न में भी नहीं मिलता और घर पर दवाई खाता रहता है। यह सब आपका ही खेल है। 'ऐसी फ्रेन्च कट चाहिए' यह निश्चत किया फिर उतनी ही दाढ़ी रखता है। यह डिज़ाइन है और नाई (हज़ाम) वैसी ही बनाकर देता है। अब सभी वकीलों को बिठाकर पूछें, 'यह हड़ताल किस तरह करते हो यह बताओ।' यह तो डिज़ाइन है, इसमें तुमने क्या किया? कहते हैं, हमने हड़ताल की थी। और फिर पुलिसवाले पकड़ने आते हैं तब ऐसे-ऐसे आजिज़ी करता रहता है, छूटने के लिए। जब मूल बात को नहीं समझता है तब अहंकार करता है और गर्वरस चखता है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी कि गर्वरस एक प्रकार के आयोजन का ही भाग माना जाता है?

**दादाश्री :** नहीं, आयोजन का भाग नहीं, वही आयोजन है।

## कर्तापद से योजना को आधार देता है

यह योजना जैसी घड़ी गई है न तो यह घड़ी हुई कहलाती है और वहाँ कर्तापद नहीं होता। यहाँ पर फिर वह (खुद को) कर्ता मानता है। यानी सिर्फ योजना ही घड़ी जाती है, वह भी फिर अकेले से नहीं, नैमित्तिक रूप से। यदि अकेले से घड़ी जा सकती तो अपनी इच्छानुसार करता। लेकिन फिर पीछे वैसे ही निमित्त है इसलिए फिर सभी नैमितिक संयोगों द्वारा ही सब घड़ा जाता है। लेकिन अपनी इच्छानुसार कुछ भी नहीं चलता। कार्य के समय खुद निमित्त नहीं है! जब पुरुषार्थ (कर्म चार्ज) होता है, उस समय खुद निमित्त है।

**प्रश्नकर्ता :** योजना के समय तो खुद निमित्त है न?

**दादाश्री :** योजना के समय निमित्त है, कार्य के समय निमित्त नहीं है। कार्य कुदरती रूप से होता रहता है और खुद उसे ऐसा मानता है कि 'मैंने किया।' यों गर्व लेने से गर्वरस का आनंद आता है, जिससे साहब को उनका अगला नया जन्म मिलता है।

कर्ता होना, इसका अर्थ क्या है? योजना को आधार देना। अकर्ता हो जाना अर्थात् क्या? योजना को निराधार कर देना।

योजना घड़ते समय सब बदला जा सकता है लेकिन जब योजना रूपक में आने लगे तब नहीं बदला जा सकता क्योंकि कि यह जगत् खुद सूक्ष्म में से स्थूल बना है। अर्थात् 'सेकन्ड स्टेज' में आया हुआ है, 'फर्स्ट स्टेज' में नहीं है। 'फर्स्ट स्टेज' में बदला जा सकता है। जो स्थूल है वह 'व्यवस्थित' के अधीन है, और एक्ज़ेक्ट (यथार्थ) है। और सूक्ष्म को खुद घड़ता है।

## गर्वरस का फल अगला जन्म

**प्रश्नकर्ता :** इसमें दो चीज़ें होती हैं न? एक तो जैसा आयोजन करता है, उसी अनुसार रूपक आता है और दूसरा जब रूपक का गर्वरस लेता है। तो आयोजन के फलस्वरूप रूपक आता है लेकिन रूपक के गर्वरस का उसे क्या फल मिलता है?

**दादाश्री :** अगला जन्म मिलेगा।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन इसमें उसका आयोजन तो नहीं होता है न?

**दादाश्री :** आयोजन तो फिर, अंदर उससे हो जाता है। जिस चीज़ का गर्वरस लेता है और वह उसे अच्छा लगता है, तो आगे चलकर वह आएगा।

**प्रश्नकर्ता :** यानी और भी मज़बूत हो जाता है।

**दादाश्री :** फिर वापस वैसा ही आता है। जहाँ अच्छा नहीं लगता, वहाँ पर गर्वरस करके ऐसा करता है कि 'पसंद नहीं है'।

## संसार का बीज 'गर्व' है, अहंकार नहीं

**प्रश्नकर्ता :** गर्व लेना तो गलत ही कहलाता है न!

**दादाश्री :** गर्व से संसार खड़ा है। संसार का बीज गर्व ही है, अहंकार नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** गर्व, वह बीज है। वह कैसे?

**दादाश्री :** दूसरी (व्यवस्थित) शक्ति के अधीन चल रहा है यह सब! ईश्वर भी नहीं करते, न ही आप इसके कर्ता हो। ऐसा मानते हो कि 'इसके कर्ता आप हो' वही तो है अगले जन्म का बीज! समझना ही पड़ेगा न एक दिन? जो अपना गुनाह ईश्वर पर नहीं डालकर खुद पर लेगा, उसे कुदरत माफ कर देगी। भगवान जो कि कुछ भी नहीं करते, उनके लिए ऐसा कहना कि 'भगवान करते हैं,' वह बहुत बड़ा जोखिम है।

अहंकार में स्वाद नहीं होता। यानी कि अहंकार बेस्वाद है और यह गर्वरस स्वादिष्ट है, बहुत ही स्वादिष्ट! मान-अभिमान भी स्वादिष्ट है, लेकिन गर्व जितना नहीं। गर्व जितनी स्वादिष्ट तो कोई भी चीज़ नहीं है। आपने चखा होगा न थोड़ा?

**प्रश्नकर्ता :** चखा है।

**दादाश्री :** ऐसा? कैसा मीठा लगता है? तलवार की धार पर लगे शहद जैसा मीठा लगता है! मीठा लगता है और फिर जीभ भी कट जाती है ज़रा। जीभ कटने से जलन होती है और फिर मीठा भी लगता है। दोनों में से कौन सा अच्छा?

**प्रश्नकर्ता :** एक भी नहीं।

**दादाश्री :** क्यों? मीठा अच्छा नहीं है? मीठा तो सभी पसंद करते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन फिर जीभ कट जाएगी।

**दादाश्री :** वह तो साथ में रहेगा ही न, जीभ तो कटेगी ही न! क्योंकि कि इस संसार के जो सुख हैं न, वे गप्प (कल्पित) नहीं हैं। लोन पर हैं। रीपे (वापस) करने पड़ेंगे। जितना ज़्यादा लोन लोगे, उतना ही ज़्यादा रीपे करना पड़ेगा।

## गर्वरस चखने की आदत की वजह से खड़ा है संसार

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कब कह सकते हैं कि संसार के सुख फ्री ऑफ कॉस्ट मिले हैं।

**दादाश्री :** संसार के सुख जो डिस्चार्ज ही हैं न, वे फ्री ऑफ कॉस्ट ही हैं। लेकिन अगर डिस्चार्ज में चार्ज न हो तभी फ्री ऑफ कॉस्ट हैं, नहीं तो 100 खर्च करते हुए अगर इच्छा हो गई तो वापस चार्ज हो जाएगा। इच्छा तो उत्पन्न होती है न उसमें से? अपने पास ज्ञान है तो उत्पन्न नहीं होती, नहीं तो इच्छा उत्पन्न हो जाती है न?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यह सब तो जन्म से ही लेकर आए हैं न?

**दादाश्री :** हाँ, जन्म से ही लेकर आए हैं, लेकिन इसका भान नहीं रहता न! और गर्वरस

चखता ही रहता है। गर्वरस चखना 'उसे' बहुत अच्छा लगता है।

और जब तक गर्वरस चखने की आदत है न, तब तक यह संसार खड़ा रहेगा। बात तो समझनी पड़ेगी न? यों ही गप्प चलेगी क्या?

## ग्रहण-त्याग के सिद्धांत में गर्वरस होना ही नहीं चाहिए

**प्रश्नकर्ता :** आज सुबह वह नई बात निकली थी। कोई कहे कि उसने वकालात छोड़ दी, तो जो ग्रहण किया था वही छूटा है लेकिन उस बात में ऐसा निकला कि 'तूने त्याग किया लेकिन तूने ग्रहण किया था, तभी तो त्याग किया।' अत: इस बात से सब पूरी तरह से समझ में आ गया। वह पूरा सिद्धांत ही स्पष्ट, हो गया।

**दादाश्री :** पूरा सिद्धांत स्पष्ट हो गया। आज ही हुआ, कभी भी नहीं हुआ था।

**प्रश्नकर्ता :** तूने जो ग्रहण किया था, वही छोड़ा, इसमें गर्वरस लेना रहा ही कहाँ? बोलने जैसा क्या रहा? ग्रहण किया, इसीलिए वह खुद गुनहगार है।

**दादाश्री :** हाँ, गर्वरस की बात तो जाने दो लेकिन लोगों को कहने जैसा भी क्या रहा? लिया हुआ वापस रख दिया, इसमें क्या गुनाह किया?

**प्रश्नकर्ता :** लिया था, वही गुनाह किया था।

**दादाश्री :** हाँ! लिया था, तब गुनाह किया था। अंत में तो उसे छोड़ने का समय आया न! लिया ही न होता तो झंझट ही नहीं थी न!

**प्रश्नकर्ता :** अब दादा, जिसने त्याग किया है और वह ऐसा बोलता है कि 'मैंने त्याग किया, त्याग किया' तो उसे जब यह बात समझ में आएगी तब तो ऐसा ही लगेगा न कि मैं कहाँ ये सारी उल्टी गिनती गिन रहा था!

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन वास्तव में वह ऐसा मानता है कि, 'मैंने त्याग किया!' तब भाई! यह तो बता कि त्याग किसका किया?

जो था, उसका त्याग कोई नहीं कर सकता! जो ग्रहण किया है, उसी का त्याग करता है। जो था ही, उसका त्याग कैसे किया जा सकता है? आत्मा तो था ही, वह उसका त्याग कैसे कर सकेगा? इसके बाद का अभी का जो तूने ग्रहण किया है, उसी का तूने त्याग किया। तभी तो ज्ञान देते समय कहते हैं कि ग्रहण व त्याग करना बंद हो गया है, अब वह सब झंझट नहीं रहा।

## जगत् में से लिया हुआ, जगत् को वापस कर देना है

**प्रश्नकर्ता :** आपने कहा कि जितना ग्रहण किया है, जितना भी लिया है इस जगत् में से, वह वापस दे देंगे तो केवलज्ञान!

**दादाश्री :** वही केवलज्ञान है। बस!

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् इस पर से एक ही वाक्य में पूरा मूल सिद्धांत ओपन हो जाता है।

**दादाश्री :** हाँ, सबकुछ ओपन हो जाता है। लेकिन यह बात अच्छी निकली। मुझे भी ऐसा आश्चर्य हुआ कि भाई, यह कैसी बात निकलती है! इसलिए इन पर से बात निकली! इनके मन में क्या लगता था कि वकालात छोड़ दी, यह सब छोड़ दिया! वकालात ग्रहण की थी तभी तो छोड़ी, नहीं तो अभी डॉक्टरी ग्रहण करके वकालात कैसे छोड़ सकते हो?

आपने जो ग्रहण किया था, वही आपने

छोड़ा? लोग कहते हैं न, ये हमारे जैसे कहते हैं, 'धंधा-वंधा सब छोड़ दिया।' (तो) भाई! जो ग्रहण किए थे, वही छोड़े हैं। तो तू यह बात कर ही क्यों रहा है? जोखिम में पड़ जाएगा। कानून की धाराएँ लागू होंगी। जैसे कि चोरी करनेवाला व्यक्ति चोरी की बात ही उड़ा देता है न? इसी तरह इस बात को उड़ा दे भाई! 'यह तो तू बोलना ही मत। मेरी भी चुप और तेरी भी चुप' कह देना। यह तो गर्वरस चखने की आदत है और सामने से लोग भी कहते हैं, 'ये महाराज! बीबी-बच्चों का त्याग तो कैसे किया होगा? ऐसा कहने पर महाराज खुश! इसलिए फिर चल पड़ती है गाड़ी।

## गर्वरस टालने का उपाय

**प्रश्नकर्ता :** गर्वरस चखने की इस आदत का कारण क्या है? उसे टालने का उपाय क्या है?

**दादाश्री :** बस! उसके पीछे अहंकार है, 'इगोइज़म' है कि 'मैं कुछ हूँ।'

जहाँ अहंकार होता है, वहाँ गर्व रहता ही है। अहंकार ही नहीं होता तो गर्व कहाँ से होगा? इसलिए इन्हें (महात्माओं को) गर्व नहीं है।

उसे टालने का उपाय क्या है? वह तो, आपमें इस 'ज्ञान' के बाद उसे तो टाल ही दिया है। अब जो 'डिस्चार्ज' रूप में बचा है, वही बचा है न! 'उससे' 'हमें' दूर रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, उस 'डिस्चार्ज' में भी यों जागृत कैसे रहना है?

**दादाश्री :** जागृति किसे कहते हैं कि सोए नहीं। उसे जागृति कहते हैं। जागृति रहेगी तो चोर नहीं घुस पाते। ये 'चंदूभाई' जो करते हैं, वह 'हमें' देखते रहना है। 'चंदूभाई' गर्वरस चखते हैं, उसे भी देखते रहना है और स्व-प्रशंसा सुनते हुए खुश होते हैं, वह भी देखते रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** और खुद ने कुछ अच्छा कार्य किया हो तो खुद औरों से कहता भी है, दस लोगों से कह आता है कि, 'मैंने ऐसा किया, ऐसा किया।' ऐसे कह दे तो क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** हाँ, लेकिन कहेगा तभी उसे गर्वरस होगा न! गर्वरस उसे कहते हैं कि औरों से कहता है। तब गर्वरस उत्पन्न होता है। तब उसे मज़ा आता है। यहाँ तक कि अगर कोई सो गया हो न, तो कुछ देर बाद उसे उठाकर बता दे, तभी छोड़ता है!

## गर्वरस में अहंकार को डाँटने का

**प्रश्नकर्ता :** यदि फाइल-वन गर्वरस ले ले तो फिर उसे डाँटना चाहिए?

**दादाश्री :** (ज़रा) डाँटना चाहिए कि 'कैसे आदमी हो? इसमें क्या मज़ा आया तम्हें?'

**प्रश्नकर्ता :** यह डाँटना नहीं हो पाता दादा। 'जान' जाते हैं। एक तरफ मिठास भी ले लेते हैं और दूसरी तरफ फिर पता भी चलता है, लेकिन असमंजस रहता है दादा। डाँट नहीं पाते क्योंकि यह मीठा लगता है इसलिए डाँट नहीं पाते।

**दादाश्री :** नहीं, कुछ देर बाद डाँटना। और आपको ज्ञान हाज़िर रखना है कि यह जो भूल हो रही थी वह भूल, अब उसमें से बाहर निकलना है।

## हम नहीं हैं इस गर्वरस में

**प्रश्नकर्ता :** वैसा कई बार मैं कहता हूँ कि, 'बैठ न, चुपचाप, बड़ा आया अक्ल का बोरा!'

**दादाश्री :** हाँ। अक्ल का बोरा कहने से राह पर आ जाएगा। 'बेचा जाए तो चार पैसे भी नहीं मिलेंगे,' ऐसा कह देना। पहले कहते थे कि अक्ल के बारदान आए हैं!

अब यह जो गर्वरस आता है, वह मीठा होता होगा या कड़वा?

**प्रश्नकर्ता :** मिठास लगती है लेकिन गर्वरस नहीं लेने के लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** करना कुछ भी नहीं है। अपना ज्ञान जानना है। गर्वरस को चखनेवाले 'हम' नहीं हैं! 'हम' कौन हैं, उसका लक्ष्य रखना पड़ता है। उसमें कुछ करना नहीं होता न!

अपना 'ज्ञान' है ही ऐसा कि गर्वरस चख ही नहीं पाता और चख ले तो तुरंत प्रतिक्रमण कर लेता है। अगर कुछ चिपट जाए, पहले के अभ्यास से वृत्तियाँ उस तरफ मुड़ जाएँ, तो तुरंत उखाड़ देता है। अर्थात् अपने 'ज्ञान' लिए हुए 'महात्मा' गर्वरस नहीं चखते। बाकी सभी लोग गर्वरस चखते हैं क्योंकि रास्ता नहीं मिला है न।

## डिस्चार्ज प्रकृति में न लो मिठास

किसी भी प्रवृत्ति की प्रकृति जो बन ही चुकी है, तो जब तक वह प्रकृति करवाए तब तक करना लेकिन बढ़ावा मत देना। अंदर रुचि नहीं लेनी चाहिए। यह हितकारी प्रवृत्ति नहीं है। जो कार्य कर सकते हो न, वह डिस्चार्ज हो रहा है। जो कार्य आप से हो रहा है, वह डिस्चार्ज है। लेकिन उसमें आप जो रुचि लेते हो, वह रुचि मत लेना। ये रुचि लेने योग्य चीज़ें नहीं है। ये आपको भटकाकर फेंक देंगी। जो मीठा लगता है, स्वादिष्ट लगता है, वह गिरा देगा!

यह जो प्रकृति उत्पन्न हो चुकी है न, तो अभी आप उसके कर्ता नहीं हो, यह तो डिस्चार्ज है। इसीलिए हम डाँटते नहीं है कि 'ऐसा हुआ?' लेकिन आपको एन्करेज भी नहीं करते। आपको मन में ऐसा लगेगा कि 'न जाने क्या हो गया यह!' तो बल्कि बिगाड़ दोगे! बगैर समझे, किसे कितनी दवाई देनी है, वह जानते नहीं हो और चाहे किसी को भी दवाई दे दोगे। वह आपका काम नहीं है। यह सब तो प्रकृति है, उसे उदासीन भाव से देखते रहो। बहुत इन्टरेस्ट मत लेना। इस प्रकृति से किसी को नुकसान नहीं हो, उतना देख लेना।

खुद का जो कार्य है, वह करना। यह तो सिर पर आ पड़ी, भरी हुई प्रकृति है! छुटकारा ही नहीं हैं। ढूँढ निकालेगी कुछ उल्टा, वहाँ पर जा आएगी। जिसमें स्वाद आए, उसमें मिठास आती है। और फिर यह मिठास प्राकृतिक मिठास है, आत्मा की मिठास नहीं है। अभी तो बहुत कुछ करना बाकी है।

**प्रश्नकर्ता :** उसके बारे में ज़रा विस्तार से समझाइए।

**दादाश्री :** आप सभी ये पाँच आज्ञा ही पालो न, उसी में गहरे उतरो। अभी तक पाँच आज्ञा का भी पूरी तरह से पालन नहीं हो रहा न! यह तो, आपको अच्छा लगे ऐसा कुछ कहते हैं। यानी कि हमें खुशी नहीं है, फिर भी खुशी दिखाई है।

**प्रश्नकर्ता :** आपको सभी गलतियाँ बताने का यही कारण है। हमें प्रोपर मार्गदर्शन मिलेगा ही यहाँ पर, ऐसा हमें दृढ़ विश्वास है। कुछ भी नहीं छुपाने का कारण ही यह है!

**दादाश्री :** वह तो जब मिठास आने लगती है न, तब छुपाने लगता है हम से! बाकी, शुरुआत में तो हम से पूछता है। उसके बाद जब बहुत मिठास आने लगती है, तब छुपाने लगता है। सावधान होकर चलना।

## मीठा लगा कि पड़ेंगी मार

**प्रश्नकर्ता :** तो खुद के ये सारे दोष भी दिखाई देने चाहिए न?

**दादाश्री :** दिखाई देते हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** अहंकार भी दिखाई देना चाहिए न?

**दादाश्री :** वह भी दिखाई देता है न!

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर उसके गिर जाने का कारण क्या है?

**दादाश्री :** यह सारी खुराक वह अहंकार ही ले जाता है। यह जो गर्व रस करवाता है न, वह सब यह अहंकार ही करवाता है हमसे कि 'यह तो बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है, लोगों को अच्छा लगा।'

**प्रश्नकर्ता :** अहंकार के इस रस को अधिक चख लेता है, उसके कारण वापस ऐसे गिरना पड़ता है न?

**दादाश्री :** हाँ और क्या! इसमें तो बहुत मिठास आती है। जैसे कि लोग कहते हैं न, 'यह मैंने किया,' तब करने का गर्व उत्पन्न होता है। जब कमाता है, तब तक गर्व रस उत्पन्न होता है और जब नुकसान हो जाए तब क्या कहता है? 'भगवान ने किया।' अरे पगले, कमाया तब 'मैंने किया' कह रहा था। और जब गर्व रस उत्पन्न होता है, उस घड़ी मिठास आती है। जब मीठा लगे न, तब जान लेना कि मार पड़नेवाली है।

## वहाँ बहुत संभलकर चलना है

अत: यदि संपूर्णत: काम निकाल लेना हो तो सावधान रहना। हो सके तब तक किसी जगह पर बातचीत नहीं करनी है। लोगों को यह ज्ञान समझाने मत जाना। नहीं तो क्या से क्या हो जाएगा! वीतरागों की वाणी का एक शब्द भी बोलना, उसमें तो जोखिम है!

लोग तो चिपट पड़ेंगे, लोगों का क्या? लोग तो समझेंगे कि हमें कुछ मिलेगा। कुछ प्राप्त हो जाए, उसके लिए लोग चिपट पड़ेंगे या नहीं? लेकिन लोगों से कह देना कि, 'इसमें मेरा काम नहीं है।' एक अक्षर भी मत बोलना। वर्ना उसमें खुद का क्या से क्या हो जाएगा!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन हमें जो अनुभव हुए हों, वे तो बता सकते हैं न?

**दादाश्री :** अनुभव तो हैं ही नहीं। जो सारी बातें निकलती हैं, वे हमारे कहे हुए शब्द ही निकलते हैं। वे शब्द उग निकलते हैं सारे। बाकी, अनुभव तो धीरे-धीरे होगा।

पूरा वीतराग विज्ञान हाज़िर हो जाना चाहिए। विज्ञान का अंश तक तो किसी को पता नहीं है। यह तो हमारी जो वाणी अंदर उतर गई है, वह निकलती है। और कोई बड़ा तीसमारखाँ आ जाए न, तो तोड़ ही देगा, तीन ही शब्दों में तोड़ देगा। बुद्धिगम्य चलेगा ही नहीं न! क्या बुद्धिगम्य जगत् के पास नहीं है? अरे, बड़े-बड़े शास्त्र के शास्त्र कंठस्थ करनेवाले लोग हैं। वे एक भी शब्द बोलेंगे तो उलझ जाओगे।

यह तो हमारा दिया हुआ 'ज्ञान' परिणामित हुआ, तो परिणामित होकर फिर उनमें (महात्मा में) उगता है। हमारा दिया हुआ जो बीज के रूप में पड़ा रहता है, वह उगता है। तब 'दादाजी ऐसा कह रहे थे' ऐसा करके बात करो। लेकिन यदि इस तरह वाणी निकलेगी, तो कुछ दिन तो ऐसा लगेगा कि ये 'दादाजी' जैसा ही कह रहे हैं। बाद में न जाने कहाँ ले जाएगा! कुछ दिन बाद गिरा देगा, वह छोड़ेगा नहीं न!!

इसलिए यदि काम पूर्ण करना हो न, तो एक ही बात याद रखना कि कोई पूछे तो कहना, 'मुझे कुछ पता नहीं है, दादाजी के पास जाओ।'

## डिस्चार्ज स्वरूप से देखना है गर्वरस को

**प्रश्नकर्ता :** अब जब यह 'डिस्चार्ज' के रूप में होता है, तब उसे सतत देखता रहता है। तो वह 'देखना' किस तरह से होता है?

**दादाश्री :** 'फिल्म' की शूटिंग की हो न, जब उसे हम देखते हैं तब उसमें किसका उपयोग होता है? स्थूल आँखों का उपयोग होता है और अंदर की आँखों का उपयोग होता है, दोनों का उपयोग होता है। ज़रूरत हो तो यह ऊपर का भाग, स्थूल चीज़ के लिए इन आँखों का उपयोग होता है। जबकि सूक्ष्म के लिए तो भीतर की आँखों से समझ में आता है। उसे देखते रहना है कि यह क्या कर रहा है, इतना ही! क्या कर रहा है, उतना ही जानना है।

इसमें बहुत गर्वरस चखता है वह सभी हमें देखते रहना है। और फिर ज़रा कहना भी है, 'चंदूभाई, यों अभी तक यह क्या चख रहे हो?! ज़रा सीधे चलो न!' ऐसा कहना, बस।

## चखनेवाला 'मैं' नहीं हूँ

**प्रश्नकर्ता :** आपने यह भी कहा कि 'गर्वरस चख लिया,' लेकिन यदि उसे देखा कि इसने गर्वरस चखा तो ऐसा कहा जाएगा न कि वह उससे अलग हो गया?

**दादाश्री :** ऐसा रहना चाहिए कि यह जो चखनेवाला है, वह 'मैं नहीं हूँ'। जो यह चख रहा है, वह 'मैं नहीं हूँ' और यदि ऐसा कहे कि 'मैंने चखा,' तब तो वह खुद ही 'वह' बन जाएगा। गर्वरस चखता है लेकिन उसके मन में ऐसा रहता है कि 'यह मैं ही हूँ।' अब अपना ज्ञान क्या कहता है कि 'मैं वह नहीं हूँ' इतना ही कहना है। इतना समझकर वहाँ जुदा रहना है और समभाव से *निकाल* (निपटारा) करना है। 'यह मैं नहीं हूँ' करके समभाव से *निकाल* करना है।

## जो उपयोग चुकवा दे वह है कचरा

**प्रश्नकर्ता :** दादा, (आपने) परसों संक्षेप में डेफिनेशन (व्याख्या) दी थी कि 'जो कोई भी चीज़ मूल उपयोग में न रहने दे, वह सारा कचरा है।'

**दादाश्री :** हाँ, जो उपयोग में न रहने दे, वह कचरा है। वह कचरा खत्म हो गया है। हमें तो साफ भी नहीं करना है, हमें तो 'देखना' है! या फिर जो भी आए वह, 'मेरा स्वरूप नहीं' कहा कि अलग। दु:ख आए, सुख आए जो कुछ आए, तब भी जो आए वह 'मेरा स्वरूप नहीं है' ऐसी जागृति रहनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** तो ये जो लेपायमान भाव हैं, वही सारा कचरा है न?

**दादाश्री :** नहीं तो और क्या? जिन्हें लेपते हैं, वही लेपायमान भाव हैं और जब निर्लेप रखते हैं तो वह उपयोग है ऐसा तो दो-तीन मिनट तक रहता है। ऐसा उपयोग हमेशा नहीं रह पाता न!

## गर्वरस के सामने जुदापन की जागृति

**प्रश्नकर्ता :** जो शुद्ध उपयोग में नहीं रहने देतीं, वे सभी चीज़ें कचरा हैं?

**दादाश्री :** हाँ! अब मैं कहाँ तक दिखाता रहूँ? अब आपको देखना है। अगर बर्तन बदबू मार रहे हैं तो जो फफूंदवाले होते हैं, वे बदबू मार रहे हैं। ऐसे बदबूदार बर्तनों में खा सकते हैं? तो तब तक उन्हें साफ करना है। इसलिए एक बार पूरी तरह से शुद्ध कर दो। मैं कब तक आपको यह कहता रहूँ?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, दादा। हमने लिख लिया है कि घर में से सावधानीपूर्वक सारा कचरा निकाल देना है।

**दादाश्री :** यह गहन बात ऐसी है कि इसमें आपका दिमाग़ नहीं चलेगा। समझ रहे हो न? समझते हो न ऐसी गहन बातों को? यह तो ज्ञानी का काम है न! इसलिए यह लिख लेने जैसा है। फिर ये बातें ही आपका सब काम कर लेंगी। ऐसा कहा था कि यह बात भूल मत जाना। अगर लिख लिया जाए तो फिर रोज़ पढ़ने से जागृति रहेगी कि अब क्या-क्या बाकी रहा? उसकी जाँच करो। जाँच करने से पता चलेगा। अंदर से भगवान ने (मुझे) कहा है कि कह दो सब से। फिर कब तक ज़िम्मेदारी रखोगे?

मैं कहीं दिखाने नहीं आऊँगा, आपको ही दिखाना है। मुझे अब फिर से नहीं कहना पड़ेगा न? अब मुझे कहने न आना पड़े। आपको ही कहना है, 'चंदूभाई ऐसे करो, ऐसे करो'। यह कचरा आपको रेग्युलर नहीं रहने देगा। इसलिए अगर घर में कचरा है तो 'हमें 'इन्हें' कह देना है कि 'चंदूभाई, देखो कचरा है अभी'। तब चंदूभाई कहेंगे 'आपके' शुद्ध होने से मुझे क्या फायदा?' तब कहना 'इतना निश्चित है कि अगर हम शुद्ध हो गए तो आपका भी सब ठीक हो जाएगा। इसकी गारन्टी है।'

**प्रश्नकर्ता :** शुद्ध तो हमें चंदूभाई को ही करना है ना?

**दादाश्री :** हाँ। 'आप' तो शुद्ध ही हो 'आप' शुद्धात्मा ही हो। अब चंदूभाई क्या कहते हैं कि 'मैं भी शुद्ध हो गया हूँ'। तब कहना, 'नहीं! बाहर से सब धुल गया है लेकिन अभी तो अंदर यह सारा कचरा पड़ा हुआ है। इसे साफ कर दो तो शुद्ध हो जाओगे!' 'बर्तन धुल गए'। 'वे तो जैसे-तैसे धो दे तब फिर 'कहीं-कहीं ज़रा सी मिट्टी दिखाई दे रही है'। 'ये तो गीले हैं' कहना। 'रगड़ो, और ज़्यादा रगड़ो।'

समझ में आया इस पर से मैं क्या कहना चाह रहा हूँ? यानी अब कचरा साफ करना है। एक काम खत्म हुआ तो दूसरा दिखाना है। हम जितना 'जुदा रहकर देखेंगे' कि यह इसने गर्वरस चखा, उतना ही *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) अलग होता जाएगा। नहीं तो अलग नहीं हो पाएगा। जैसे ही 'देखा' तो हम अलग और *पुद्गल* भी अलग हो जाएगा।

## रहना है ज्ञातापद में *पूरण-गलन* में

यह तो, जो भरा हुआ माल था, उसका खाली हो जाना, कहलाता है *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है)। फिर खाली हो जाएगा, अपने आप चला जाएगा और फिर से नाम नहीं लेंगे वापस।

जो *पूरण* (चार्ज होना) किया है, उसका *गलन* (डिस्चार्ज होना) हो रहा है और जो *गलन* हुआ है उसी का *पूरण* होता है, वह तू देखना। खुद ज्ञानाकार है, आत्माकार है तो फिर क्षेत्राकार क्यों हो जाता है?

*पुद्गल* पूरा ही *पूरण-गलन* होता रहता है। उसे सिर्फ देखो, उसमें दखल न करो। इस *पूरण-गलन* को जो जान रहा है, वह ज्ञाता-दृष्टा व परमानंदी है। यह आत्मा ही परमात्मा है।

हमें *पूरण-गलन* का स्वाद नहीं लेना है। जब *पूरण* हो तब हम गर्व नहीं लें और *गलन* होने लगे तब हताश न हों।

## निष्कर्ष की बही तैयार रखो

कुदरत आपको ज़रूरत की चीज़ें सप्लाइ करती है और खुद कहता है कि 'मैं कर रहा हूँ'। सब तैयार है तो फिर उसमें हमने क्या किया? जो तैयार नहीं है उसके लिए कुछ करना, पुरुषार्थ कहलाता है।

कुछ सार तो निकालना चाहिए न? निष्कर्ष की बही साथ में रखनी चाहिए। सब्ज़ी लेने गए, वह तो अनिवार्य रूप से लानी चाहिए लेकिन रास्ते में फलाँ भाई 'जय-जय' करे तो, उससे छाती यों फूल जाती है! उससे नुकसान ही होता है न? इसलिए बही देखकर सार निकालना चाहिए कि कहाँ नुकसान हुआ? विवाह में गए और किसी ने 'आइए सेठ' कहा कि तुरंत ही आप टाइट हो जाते हो तब देखनेवाला समझ जाता है कि सेठ ने नुकसान उठाया! उसमें सामनेवाले का तो फर्ज़ है कि आपको 'आइए' कहे लेकिन आपको वहाँ पर कच्चा नहीं पड़ जाना चाहिए। ऐसे पक्के हो जाओ कि कहीं भी नुकसान न हो। एक बार नुकसान उठाया, दो बार उठाया, बीस बार नुकसान उठाया, पर अंत में आपको सार निकालना चाहिए कि ये 'जय-जय' कह रहे हैं, वे मुझे कह रहे हैं या भीतरवाले को कह रहे हैं? 'भीतर' 'भगवान' बैठे हैं, वे 'शुद्धात्मा' हैं।

## विज्ञान ही छुड़वाए गर्वरस

अब आप ऐसा मान ही नहीं सकते कि सामनेवाला 'कर्ता' है। जैसे 'मैं नहीं कर रहा' इसी तरह सामनेवाला भी नहीं कर रहा है और यदि उसे कर्ता मानते हो तो आप भी कर्ता ही हो गए! यदि औरों को कर्ता नहीं देखें तो खुद अकर्ता और सामनेवाला भी अकर्ता। 'मैं कर रहा हूँ, तू कर रहा है और वे कर रहे हैं' ये तीनों ही कर्तापद नहीं होने चाहिए, सभी में। चाहे जैसे (संयोगों में) कोई कर ही नहीं रहा, इस तरह दिखाई देना चाहिए।

अब जैसा है वैसा जान लें कि 'भाई, हम कर्ता नहीं हैं और यह तो 'व्यवस्थित' कर रहा है', तभी से हम मुक्त हो जाएँगे। ऐसा विज्ञान होना चाहिए अपने पास। फिर राग-द्वेष होंगे ही नहीं न! विज्ञान से ऐसा जान जाते हैं कि अब हम 'यह' हैं ही नहीं। मैं यह जो कह रहा हूँ, वह विज्ञान मेरा नहीं है, यह वीतराग विज्ञान है! चौबीस तीर्थंकरों का विज्ञान है! वीतराग विज्ञान के बिना मनुष्य बात को प्राप्त कैसे कर सकेगा?!

## वीतरागों की मौलिक शोध

यह सब तो 'अक्रम विज्ञान' से पता चला है। मैंने जो 'आत्मा' देखा है न, वह 'इसके' जैसा देखा है। कुछ भी काम नहीं करे वैसा बल्कि उसकी उपस्थिति (हाज़िरी) से यहाँ सारी क्रियाएँ चलती रहती हैं।

कार्य करनेवाली शक्ति कोई और ही है। उसे शास्त्रकारों ने 'परसत्ता' कहा है। स्व-सत्ता सेल्फ रियलाइज़ (आत्मज्ञान) होने के बाद ही आती है, तब तक स्व-सत्ता नहीं आ सकती। (सबकुछ) परसत्ता में है। आत्मज्ञान होने के बाद सब हो सकता है। अनादिकाल से यही भ्रांति घुस गई है। उस भ्रांति को निकालने में भी बहुत टाइम (समय) लगता है। क्योंकि यह इतना निकटवर्ती है कि खुद को भी पता नहीं चलता, 'यह मैं कर रहा हूँ या अन्य कोई कर रहा है?' वह अत्यंत निकटवर्ती है। यानी यह वीतरागों का साइन्स है। बहुत उच्च शोध (आविष्कार) है और कैसा गूढ़ार्थ? अत्यंत गुह्य।

यहाँ तो खुद का मन इतना मज़बूत कर लेना है न, कि ''इस जन्म में जो हो, भले ही देह जाए, लेकिन इस जन्म में कुछ 'काम' निकाल लूँ'' ऐसा तय करके रखना चाहिए। इसलिए फिर अपने आप काम होगा ही। आपको अपना तय करके रखना चाहिए। आपकी तरफ से ढील नहीं रखनी है। जहाँ ऐसा प्राप्त हुआ है वहाँ ढील नहीं रखनी है।

**- जय सच्चिदानंद**

## आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

### पंजाब-हरियाणा-दिल्ली

**सोनीपत** **दिनांक :** 20 सितम्बर **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9728310007
**स्थल :** घर नं. 20/50, गली नं-1, मालविया नगर, ककरोई रोड, **सोनिपत.**

**पानीपत** **दिनांक :** 21 सितम्बर **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9812131414
**स्थल :** मनोरंजन केन्द्र, NFL टाउनशीप, **पानीपत.**

**कुरुक्षेत्र** **दिनांक :** 22 सितम्बर **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9467763460
**स्थल :** भगवान परशुराम कोलेज, मेईन मार्केट, सेक्टर-5, हुडा, **कुरुक्षेत्र.**

**चंदीगढ़** **दिनांक :** 23 सितम्बर **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9872188973
**स्थल :** गढ़वाल भवन, सेक्टर-29-A श्री साई बाबा मंदिर के पास, **चंदीगढ़.**

**जालंधर** **दिनांक :** 24 सितम्बर **समय :** सुबह 10 से 4 **संपर्क :** 9814063043
**स्थल :** इगल प्रकाशन कोम्प्लेक्स, सेंट्रल मिल कम्पाउंड, नजदीक दोरिया पुल, रेलवे स्टेशन, **जालंधर.**

**जालंधर** **दिनांक :** 25 सितम्बर **समय :** सुबह 10 से 6 **संपर्क :** 9814063043
**स्थल :** इगल प्रकाशन कोम्प्लेक्स, सेंट्रल मिल कम्पाउंड, नजदीक दोरिया पुल, रेलवे स्टेशन, **जालंधर.**

### उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड

**गाजियाबाद** **दिनांक :** 19 सितम्बर **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9968738972
**स्थल :** कोनार्क एनक्लेव, सेक्टर-17, 'E' ब्लोक, वसुंधरा, साई मंदिर के पास, **गाजियाबाद.**

**हरिद्वार** **दिनांक :** 21 सितम्बर **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9719415074
**स्थल :** सियाराम जानकी वल्लभ सेवा सदन, दुधारी चौक, साई बाबा वाली गली, भूपतवाला, **हरिद्वार.**

**लखनौ** **दिनांक :** 22 सितम्बर **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 8090177881
**स्थल :** मधुर संगीत विद्यालय, 563/74, चित्रगुप्त नगर, आलमबाग, **लखनऊ.**

**गोरखपुर** **दिनांक :** 23 सितम्बर **समय एवं स्थल की जानकारी हेतु** **संपर्क :** 7309061683

**वाराणसी** **दिनांक :** 24-25 सितम्बर **समय एवं स्थल की जानकारी हेतु** **संपर्क :** 9452710927

**अलाहाबाद** **दिनांक :** 26 सितम्बर **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9335889980
**स्थल :** कमला नेहरु इलेक्ट्रो होमियोपेथी इनस्टिट्यूट, रामबाग के सामने, रेल्वे स्टेशन, **अलाहाबाद .**

**कानपुर** **दिनांक :** 27 सितम्बर **समय एवं स्थल की जानकारी हेतु** **संपर्क :** 9452525981

### छत्तीसगढ़

**रायगढ़** **दिनांक :** 20 सितम्बर **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9893569548
**स्थल :** मेगा फूड मार्ट के नीचे, रामबाग के पास, कोटरा रोड, **रायगढ़.**

**बिलासपुर** **दिनांक :** 21 सितम्बर **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9425530470
**स्थल :** जैन भवन, गुजराती समाज के सामने, टिकरापारा, **बिलासपुर.**

### महाराष्ट्र

**सतारा** **दिनांक :** 20 सितम्बर **समय :** दोपहर 3 से 6 **संपर्क :** 9421212685
**स्थल :**साँई दत्ता मंगल कार्यालय, वधे फटा हाई-वे, नेवल सरदार बाझार, **सतारा.**

**कोल्हापुर** **दिनांक :** 21 सितम्बर **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9960787776
**स्थल :**सुमेध होल, शाहपुरी, गोकुल होटल के पीछे, दूसरी लेन, **कोल्हापुर.**

## दादावाणी

**सांगली** **दिनांक :** 22 सितम्बर **समय :** शाम 4-30 से 7 **संपर्क :** 9423870798
**स्थल :** पाटीदार भवन, सर्किट हाउस, माधवनगर रोड, **सांगली.**

**सोलापुर** **दिनांक :** 23 सितम्बर **समय :** शाम 4 से 6-30 **संपर्क :** 8421899781
**स्थल :** कन्हैयालाल ब्रदर्स के ऊपर, दत्ता चौक, **सोलापुर.**

**पूणे** **दिनांक :** 24-25 सितम्बर **समय एवं स्थल की जानकारी हेतु** **संपर्क :** 7218473468

**मुंबई** **दिनांक :** 25 सितम्बर **समय एवं स्थल की जानकारी हेतु** **संपर्क :** 9323528901

**अहमदनगर** **दिनांक :** 26 सितम्बर **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9421836256
**स्थल :** पटेल मंगल कार्यालय, सरदार पटेल वाडी, होटेल राज पेलेस के पास, तिलक रोड, **अहमदनगर.**

**औरंगाबाद** **दिनांक :** 27 सितम्बर **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 8308008897
**स्थल :** यशोमंगल हॉल, पन्नालाल नगर, न्यू उस्मानपुरा, **औरंगाबाद.**

**नासिक** **दिनांक :** 28 सितम्बर **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9021232111
**स्थल :** पाटीदार भवन जनरल वैद्य नगर, स्टेशन रोड, पूर्णिमा बस स्टोप, नासरडी, **नासिक.**

**जलगाँव** **दिनांक :** 29 सितम्बर **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9422354985
**स्थल :** ओमकार रिसोर्ट्स, DSP चौक, HDFC बेंक के पास, महाबल रोड, **जलगाँव.**

**अमरावती** **दिनांक :** 17-18 सितम्बर **समय एवं स्थल की जानकारी हेतु** **संपर्क :** 9422335982

**अन्य राज्य**

**गोआ** **दिनांक :** 24 सितम्बर **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 8698745655
**स्थल :** मेनेझेस ब्रागान्झा होल, पुलीस स्टेशन के पास, **पणजी.**

---

### 'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

---

### 'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

---

**त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज :** (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,
**अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230
**यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

## Pujya Deepakbhai's Fiji-NZ-Malaysia Satsang Schedule 2016

| Date | Day | City | From | To | Session Title | Venue | Contact No. & Email |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 18-Sep | Sun | SUVA | 6-00 PM | 8-00 PM | Aptaputra Satsang | Shree Laxmi Narayan Mandir, 5 Holland Street, Suva, **Fiji** | +679 9313879<br>dadabhagwanfiji@gmail.com |
| 19-Sep | Mon | BA | 7-00 PM | 9-00 PM | Aptaputra Satsang | Shree Radha Krishna Mandir, Ganga Singh Street, Ba, **Fiji** | +679 9313879<br>dadabhagwanfiji@gmail.com |
| 20-Sep | Tue | LAUTOKA | 7-30 PM | 9-30 PM | Satsang | Fiji Girmit Centre Hall, Tavakubu Road, Lautoka, **Fiji** | +679 9313879 |
| 21-Sep | Wed | LAUTOKA | 7-30 PM | 10-00 PM | Gnanvidhi | | +679 9447678 |
| 22-Sep | Thu | LAUTOKA | 7-30 PM | 9-30 PM | Satsang | | dadabhagwanfiji@gmail.com |
| 23-Sep | Fri | ROTORUA | 8-00 PM | 9-30 PM | New Zealand Shibir | Holiday Inn, 10 Tryon St, Whakarewarewa, Rotorua 3043 **New Zealand** | +64 21 037 6434 |
| 24-Sep | Sat | ROTORUA | All Day | All Day | New Zealand Shibir | | +64 9 9486119 |
| 25-Sep | Sun | ROTORUA | 3-00 PM | 6-30 PM | Gnanvidhi | | info@nz.dadabhagwan.org |
| 26-Sep | Mon | ROTORUA | All Day | All Day | New Zealand Shibir | | |
| 28-Sep | Wed | MELAKA | 7-45 PM | 10-00 PM | Satsang | Gujarati Vanik Sangh, 99-101 Jalan Banda Kaba, 75000 Melaka, **Malaysia** | +60126385035<br>info@sg.dadabhagwan.org |
| 29-Sep | Thu | MELAKA | 7-45 PM | 10-00 PM | Satsang | Malacca Gujarati Samaj, No 186 Jalan Ujong Pasir, 75050, Melaka, **Malaysia** | +60126385035 |
| 30-Sep | Fri | MELAKA | 6-30 PM | 10-00 PM | Gnanvidhi | | info@sg.dadabhagwan.org |

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत**
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

**USA**
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

**UK**
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत**
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर सोम से गुरु रात 10 से 10-30, शुक्र से रवि रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

**USA**
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

**UK**
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

**Singapore**
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

**Australia**
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

**New Zealand**
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

**USA-UK-Africa-Aus.** **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

## आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

### पूणे

**21 अक्तूबर** (शुक्र), शाम 5-30 से 8-30 - **महात्माओं के लिए विशेष सत्संग**

**22 अक्तूबर** (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **23 अक्तूबर** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

**स्थल :** गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम केम्पस, स्वारगेट बस स्टेशन के पास. **संपर्क :** 7218473468

**24 अक्तूबर** (सोम), शाम 5-30 से 8-30 -**आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क :** 7218473468

### अडालज त्रिमंदिर

**30 अक्तूबर** (रवि), रात 8-30 से 10-30 - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

**31 अक्तूबर** (सोम), सुबह 8-30 से 1, शाम 5 से 6-30 -**नूतन वर्ष ( वि.सं. ) के अवसर पर दर्शन-पूजन**

### नवसारी

**5 नवम्बर** (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **6 नवम्बर** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

**7 नवम्बर** (सोम), शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

**स्थल :** संस्कार भारती हाइस्कूल, आशापुरी मंदिर रोड, नवसारी. **संपर्क :** 9924343479, 9898694536

### परम पूज्य दादा भगवान का 109वाँ जन्मजयंती महोत्सव - वलसाड शहर में

**9 नवम्बर** (बुध), शाम 5 बजे से - **उद्घाटन समारोह**, तथा शाम 8-30 से 10 - **सत्संग**

**10 नवम्बर** (गुरु), सुबह 9-30 से 12 ; शाम 7-30 से 10 - **सत्संग**

**11 नवम्बर** (शुक्र), सुबह 9-30 से 12 ; शाम 7-30 से 10 - **सत्संग**

**12 नवम्बर** (शनि), सुबह 9-30 से 12 ; शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

**13 नवम्बर** (रवि), सुबह 8 से 1, शाम 4-30 से 6-30 - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

14 एवं 15 नवम्बर शाम 5 से 10 चिल्ड्रन पार्क और थीम पार्क सिर्फ वलसाड के स्थानिक लोगो के लिए खुला रहेगा।

**स्थल :** आई.पी. गांधी हाईस्कूल के सामने, वांकी नदी के पास, जुजवा गाँव, वलसाड-धरमपुर रोड. **संपर्क :** 9924343245

**सूचना :** 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह ९ से १२ तथा ३ से ६ के दौरान) पर दि. 23 अक्तूबर 2016 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) **गद्दे की व्यवस्था नहीं हैं ।** ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ। 3) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

### कोलकाता

**18 नवम्बर** (शुक्र), शाम 5-30 से 8-30 - **महात्माओं के लिए विशेष सत्संग**

**19 नवम्बर** (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **20 नवम्बर** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

**स्थल :** जी.डी.बिरला सभाघर, 29, आसुतोष चौधरी एवन्यु, बिरला मंदिर, बालीगंज, कोलकाता. **संपर्क :** 9830093230

**21 नवम्बर** (सोम), शाम 5-30 से 8-30 -**आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क :** 9830093230

### भिलाई

**22 नवम्बर** (मंगल), शाम 5 से 8 - **सत्संग** तथा **23 नवम्बर** (बुध) शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**

**24 नवम्बर** (गुरु), शाम 5 से 8 - **आप्तपुत्र सत्संग**

**स्थल :** पुलिस ग्राउन्ड, सेक्टर-6, भिलाई (छत्तीसगढ़). **संपर्क :** 8349545600

### दिल्ली

**25-26 नवम्बर** (शुक्र-शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **27 नवम्बर** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

**स्थल :** तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, न्यु दिल्ली. **संपर्क :** 9810098564

**28 नवम्बर** (सोम), शाम 5-30 से 8-30 -**आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क :** 9810098564

सितम्बर 2016
वर्ष-11 अंक-11
अखंड क्रमांक - 131

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

## गर्वरस चखे तब तक मोक्ष दूर

जहाँ अहंकार होता है, वहाँ गर्व रहता ही है। ज्ञानी में अहंकार ही नहीं होता तो गर्व कहाँ से होगा? कोई क्रिया 'मैंने की है,' ऐसा हमें रहता ही नहीं। अब, इसके कर्ता बनने का रस चखते हैं, इसलिए जी पाते हैं ये लोग! इस गर्वरस के सामने उन्हें कुछ अच्छा ही नहीं लगता। कहता है, 'मैंने त्याग किया, स्त्री का त्याग किया, करोड़ों रुपए छोड़कर आया हूँ, तो मोक्ष के लिए ही आया हूँ न!' तब मैंने कहा, 'किसलिए, वह तो आप जानो। आपको अभी तक कौन सा रस चखना पसंद है, उसका क्या पता? रुपये का रस अच्छा नहीं लगा लेकिन दूसरे तो तरह-तरह के रस और तरह-तरह की कीर्ति होती है न!' जब तक किसी भी प्रकार का गर्वरस चखता है, तब तक मोक्ष की बात ही नहीं करनी है। जिनमें गर्व नहीं होता, गारवता नहीं होती, अंतरंग स्पृहा नहीं होती, उन्मत्तता नहीं होती, ऐसे प्योर ज्ञानी से भेंट हो जाए तो मुक्ति मिल जाती है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.